राष्ट्ररक्षा सङ्गोष्ठी

(अगस्त २०२०)

ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य
स्वामी श्रीनिश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज का प्रवचन

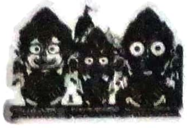

श्री हरिः

श्री गणेशाय नमः

राष्ट्ररक्षा सङ्गोष्ठी (अगस्त २०२०)

(ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य
स्वामी श्रीनिश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज का प्रवचन)

हमारा लक्ष्य :-

**सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, सम्पन्न,
सेवा परायण, स्वस्थ और सर्वहितप्रद
व्यक्ति तथा समाज की संरचना**

सम्पादन – आदित्यवाहिनी हरियाणा

|| श्रीहरिः ||

|| श्रीगणेशाय नमः ||

राष्ट्ररक्षा सङ्गोष्ठी (अगस्त २०२०)

विषयानुक्रमणी

क्रम	विषय	पृष्ठ
१.	राष्ट्ररक्षा सङ्गोष्ठी (दिवस १)	1
२.	राष्ट्ररक्षा सङ्गोष्ठी (दिवस २)	28

इस प्रवचन में निम्नलिखित विषयों का समावेश है -

- सृष्टि की संरचना का प्रयोजन
- सनातन वैदिक सिद्धांत के अनुपालन से लौकिक-पारलौकिक उत्कर्ष की प्राप्ति
- सनातन सिद्धांत को मनःकल्पित विधा से क्रियान्वित करने पर फल की अप्राप्ति
- वैदिक वाङ्गमय के आधारपर राजनीति की परिभाषा
- अंग्रेज़ों की कूटनीति के कारण मनुवाद से विद्वेष और भारत में व्यासपीठ की उपेक्षा तथा उसे विकृत एवं विलुप्त करने का षड्यंत्र
- गुरु के मार्गदर्शन के आभाव में देवताओं एवम् दैत्यों का भी अपकर्ष सुनिश्चित
- व्यासपीठ से सम्बद्ध महानुभावों द्वारा ही प्रत्येक युग में शासनतंत्र का शोधन सम्भव
- सिक्ख, जैन और बौद्ध को अल्पसंख्यक घोषित करके हिन्दुओं को अल्पसंख्यक व दुर्बल बनाने का षड्यंत्र
- वर्तमान युग में भी सनातन सिद्धांत सर्वोत्कृष्ट है। विश्व की कोई शक्ति शास्त्रसम्मत सिद्धांत के आगे टिक नहीं सकती।
- राष्ट्ररक्षा की दृष्टि से सबका सैन्यप्रशिक्षण अनिवार्य
- दिशाहीन अहिंसा के गर्भ से भारत की परतंत्रता का मार्ग निकला
- नीति एवं अध्यात्म विहीन शिक्षापद्धति के कारण व्यक्ति को शोषक बनाने का मार्ग प्रशस्त
- आर्थिक दृष्टि से वर्णाश्रमव्यवस्था की उपयोगिता
- हिन्दुओं के प्रमाद के फलस्वरूप अन्य तन्त्रों की उद्भावना
- राजनेताओं की सहभागिता के कारण धर्मपरिवर्तन
- एक रुपया और एक घण्टे का प्रकल्प
- हिन्दू शब्द बाहर से नहीं आया
- हिन्दू किसी के लिये खतरा नहीं। सनातन सिद्धांत सबके हित का मार्ग प्रशस्त करता है।
- गिने-चुने वर्षों में ही भारत की अखण्डता का मार्ग प्रशस्त हो। भारत, नेपाल व भूटान हिन्दुद्वीप के रूप में उद्भासित हों।
- विकास के नाम पर पृथ्वी के धारक तत्वों का विलोप
- त्याग के बिना यज्ञ, तप, व्रत, योग सम्भव नहीं

- वेद विहीन विकास के कारण पुरुषार्थ चतुष्टय का विलोप
- महायन्त्रों के प्रचुर अविष्कार व प्रयोग से दिव्य वस्तु एवं व्यक्ति का विलोप
- शास्त्रों में देवियों के शील की रक्षा के लिये विश्वयुद्ध का वर्णन
- भगवान् के आयुधों का रहस्यात्मक स्वरूप
- भारत के विखण्डन का षड्यंत्र
- क्या भारत स्वतंत्र कहलाने योग्य है?
- राजनेताओं द्वारा आतंकवादियों का पोषण
- सेकुलर शासनतंत्र में सनातन मानबिंदुओं की रक्षा सम्भव नहीं।

★★★★★

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीगणेशाय नमः

राष्ट्ररक्षा सङ्गोष्ठी (अगस्त २०२०)

(दिवस १)

शिवाय नमः शिवलिङ्गाय नमः

तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु

सर्वे भवन्तु सुखिनः

आप सभी महानुभावोंने अद्भुत अपनत्व और आस्थापूर्वक समयकी सीमामें अपने भावोंको व्यक्त किया। आपके विचारोंको सुनकर मैं बहुत ही प्रमुदित हुआ और प्रभावित भी हुआ। वस्तुस्थिति यह है कि जगत् की संरचनाका और जीवनका जो प्रयोजन है उसका विधिवत् ज्ञान न होनेके कारण जगत् में दिशाहीनता है जीवनमें दिशाहीनता है। महाप्रलयकी दशामें जीव और जगत् 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक परमात्मासे एकीभूत होकर शेष रहता है। **महासर्गके प्रारम्भमें भगवान् सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वर अकृतार्थ प्राणियोंको कृतार्थ होने का अवसर प्रदान करनेकी भावनासे आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी से मण्डित सृष्टि की संरचना करते हैं और जीवोंको अभुक्त कर्मोंका फल भोगनेके लिये, नवीन कर्मोंके सम्पादन के लिये, तत्वज्ञान की**

क्षमता अर्जित करने के लिये, देह, इन्द्रिय , प्राण, अंतःकरण से युक्त जीवन प्रदान करते हैं। चाहे स्थावर प्राणी हों, चाहे जङ्गम प्राणी हों सबके अंतर्निहित भाव को समझने की आवश्यकता है। हम जितने प्राणी हैं, जीव हैं हमारी चाह का जो सचमुच में विषय है उस पर विचार करने की आवश्यकता है। और हमारी चाह का जो विषय है उसे हम उपलब्ध कर सकें तो स्वस्थ जीवन और जगत् की संरचना हो सकती है।

आप महानुभावों ने वेदों का उद्घोष सुना होगा :-

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय॥ इसका अभिप्राय होता है:- मृत्यु, जड़ता और दुःख से अतिक्रांत जीवन हम प्राप्त कर सकें। ऐसा जीवन जहाँ मौत की छाया भी न पहुँच सके। जड़ता,अज्ञता से सुदूर जीवन हो। दैहिक, दैविक, भौतिक त्रिविध तापों से अतिक्रांत जीवन हो।

वैदिक वाङ्मय का अनुशीलन करने पर हमारा-आपका जो तात्विक वास्तविक स्वरूप सिद्ध होता है जहाँ मृत्यु, जड़ता, दुःख की पहुँच ही नहीं है ; वैसा होकर ही हम शेष रह सकें यह हमारे हृदय में निसर्गसिद्ध भावना है। जब तदनुकूल व्यक्ति के जीवन की संरचना होती है - भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य,

यातायात, उत्सव, त्योहार, रक्षा, सेवा, न्याय, विवाह आदि के प्रकल्प चलाये जाते हैं तो सबके उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

मैं एक संकेत करना चाहता हूँ चौदह भुवनों का एक ब्रह्माण्ड होता है। आप सनातन सिद्धांत में आस्थान्वित महानुभाव हैं, सुगमतापूर्वक इस तथ्यको समझ सकते हैं कि मर्त्यलोक जिसको भूमण्डल कहते हैं, थोड़ी देर के लिये उसे छोड़कर जो अन्य लोक हैं, वहाँ जितने प्राणी हैं, उनमें सूर्य भी हैं, चंद्रमा भी हैं, वायु भी हैं, अग्नि भी हैं, यक्ष भी हैं, साथ ही साथ गन्धर्व भी हैं, पितर भी हैं, देवता भी हैं, यहाँ तक कि सत्यलोक में ब्रह्मा भी रहते हैं, इन सबको जो उत्कर्ष प्राप्त हुआ है इसके मूल में क्या सिद्धांत है इस पर विचार करने की आवश्यकता है। बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार मैं एक भाव व्यक्त करना चाहता हूँ - आज जो ब्रह्माजी के पद पर प्रतिष्ठित हैं वे कभी मर्त्यलोक में, भारतवर्ष में, सत्कुल में समुत्पन्न थे। उन्होंने विधिवत् कर्म और उपासना का निष्काम भाव से आलम्बन लिया और उसके प्रभाव से वे आज ब्रह्माजी के पद पर प्रतिष्ठित हैं। मैंने अब तक यह संकेत किया कि **विश्व में जहाँ कहीं कोई उत्कर्ष है, दिव्यता है वह वेदोक्त सनातन सिद्धांत के अनुरूप कर्म और उपासना के फलस्वरूप है। इस रॉकेट, कंप्यूटर, एटम और मोबाइल के युग में भी वैदिक सिद्धांत को कोई अन्यथा सिद्ध नहीं कर सकता। हर देश में, हर काल में, हर परिस्थिति में जिसकी उपयोगिता सिद्ध हो**

उसी को सनातन वैदिक सिद्धांत कहा जाता है। हमारा सिद्धांत दार्शनिक, वैज्ञानिक, व्यवहारिक तीनों धरातल पर इतना ठोस है कि कोई उधर उंगली उठा कर देख नहीं सकता। मैं एक संकेत और करना चाहता हूँ - **बहुत से पंथ हुए जिन्होंने हमारे सिद्धांत को लिया लेकिन प्रक्रिया (विधा) उन्होंने अपनी कल्पित की तो हमारे सिद्धांत को अपनाने में समर्थ होने पर भी जीवन में उतारने में सफल नहीं हुए।** केवल संकेत करता हूँ - अहिंसा, अस्तेय, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पञ्चशील हैं। मानवोचित शील की जीवनमें प्रतिष्ठाके लिये आवश्यक है कि अहिंसा हो, सत्य हो, ब्रह्मचर्य हो, अस्तेय हो, अपरिग्रह हो। लेकिन **हमारी सनातन विधा को न अपनाकर जिस-जिस पंथ ने, तंत्र ने, व्यक्ति ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह को अपनाया उसके गर्भसे विस्फोट निकल गया। इसका अर्थ यह है कि सिद्धांत हमारा हो, उसको क्रियान्वित करने की प्रक्रिया या विधा कोई नवीन उद्भासित की जाय तो उससे उस फल की प्राप्ति नहीं हो सकती है- नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।**

मैं एक संकेत करना उचित समझता हूँ - हमने वेदादि शास्त्रों का मंथन करके राजनीति की एक स्वस्थ परिभाषा दी है उस पर ध्यान केन्द्रित करें, उसको क्रियान्वित करने का प्रकल्प हो तो सारी विसंगतियों को हम दूर करने में समर्थ हो सकते हैं- **सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, सम्पन्न, सेवा परायण, स्वस्थ और सर्वहितप्रद**

व्यक्ति तथा समाज की संरचना, यह राजनीति की स्वस्थ परिभाषा वेदादि शास्त्रों के आधार पर उद्घोषित है। इसको क्रियान्वित करने का प्रकल्प चलाया जाये तो कोई विसंगति नहीं रह सकती है। अब व्यवहारिक धरातल पर मैं एक तथ्य वेदनापूर्वक प्रकट करना चाहता हूँ , सावधान! **अंग्रेजों की कूटनीति यह रही कि व्यासपीठ जो सनातन परम्परा से प्राप्त थी, आचार्य का पद जो सनातन परम्परा से प्राप्त था, उसे विकृत किया जाये उसकी उपेक्षा की जाये, राजनेता ही व्यासपीठ के दायित्व को ही मानो अपना लें।** एक कूटनीति अंग्रेजों की थी उस पर आपका ध्यान केन्द्रित हो यह बहुत आवश्यक है। इस कल्प में हमारी गुरु परम्परा श्रीमन्नारायण से लेकर अब तक 1 अरब 97 करोड़ 29 लाख 49 हज़ार 120 वर्षों की है। भगवत्पाद आदि शङ्कराचार्य महाभाग को लेकर ही विचार करें तो उनका प्रादुर्भाव ईस्वी सन् से 507 वर्ष पूर्व हुआ, इस गोवर्द्धनमठ पुरीपीठ की स्थापना के 2504 वर्ष पूर्ण हो जाते हैं वैशाख शुक्ल दशमी के दिन। इतनी प्राचीन हमारी परम्परा थी। मैं एक संकेत करना उचित समझता हूँ - देवराज इन्द्र कोई सामान्य व्यक्ति नहीं होते हैं। दिव्यता की पराकाष्ठा जब किसी व्यक्ति में होती है तब वह देहत्याग के बाद देवराज इन्द्रके पद को प्राप्त करता है। लेकिन उन देवराज इन्द्र को भी बृहस्पति का मार्गदर्शन अपेक्षित रहता है। साथ ही साथ विरोचन आदि को भी शुक्राचार्य का मार्गदर्शन अपेक्षित रहता है। कहीं शुक्राचार्य जी विरोचन आदि की उपेक्षा कर दें तो

दैत्य, दानव, असुर अपने अस्तित्व की रक्षा करने में समर्थ नहीं होते। **कहीं देवगुरु बृहस्पति का स्वस्थ मार्गदर्शन देवराज इन्द्र को सुलभ ना हो तो देवराज इन्द्र भी सुरक्षित नहीं रहते, लेकिन स्वतंत्र भारत में कूटनीति चली गई कि राजनेता ही व्यासगद्दी का दायित्व भी सम्भाल लें।** मैंने एक संकेत किया, एक राजनेता को उत्कृष्ट सन्त / महात्मा के रूप में ख्यापित किया गया, उसके बाद में अब तक यह बीमारी चल रही है की व्यासपीठ को अन्यथा सिद्ध करने के लिये, व्यास पीठ के आचार्यों की उपयोगिता को विलुप्त करने के लिये सन्तों का उपयोग अपने-अपने दल के प्रचार में किया जा रहा है। **कोई भी स्वस्थ प्रधानमंत्री अब तक नहीं हुए जिनके हृदय में इस रहस्य को प्रकट करने की भावना हो कि व्यासपीठ को असुरक्षित करके, दिशाहीन करके व्यासपीठ के सदस्यों को अपना अनुगामी बना करके राष्ट्र का उत्कर्ष नहीं हो सकता। मैंने संकेत किया। यह कूटनीति इस समय भी ज्यों की त्यों विद्यमान है - कोई ऐसा सन्त ना हो, कोई ऐसा आचार्य ना हो, कोई ऐसा विचारक ना हो, धर्म और दर्शन के आधार पर विश्व को स्वस्थ मार्गदर्शन देने वाला ना रह जाये, जो ऐसा न हो कि राजनीती का अभी जो दिशाहीन प्रकल्प है, उससे उत्कृष्ट सिद्ध हो जाये, वह दिशा देने वाला सिद्ध हो जाये। छल बल डंके की चोट से कितने ही ऊंचे राजनेता हों, उनके मन में यह विभीषिका पली है। क्योंकि मन्वादि**

शास्त्रसम्मत सिद्धांत को जो जानता है उसके सामने विश्व की कोई शक्ति टिक नहीं सकती।

थोड़ा इतिहास को परखिये। मैं स्पष्ट शब्दों में कह देना उचित समझता हूँ समय की सीमा में, सावधान! हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष जैसा प्रभावशाली कोई आतंकवादी आज विश्व में नहीं है। जिसकी देवलोक तक अकुण्ठित गति हो इतना प्रभावशाली कोई आतंकवादी आज विश्व में नहीं है यह मुझे अच्छी तरह मालूम है। लेकिन हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष का भी दमन करने की क्षमता किसमें थी? कोई उस समय शासक या राजा ऐसा नहीं था जो हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के उन्माद को दूर कर सके। देवर्षि नारद ने स्वस्थ क्रान्ति को उद्भासित किया। हिरण्यकशिपु के पुत्र को चलता-फिरता आत्मबम बना कर प्रह्लाद को सामने रख दिया। इसका अर्थ यह है कि शासनतंत्र में उचित आमूलचूल परिवर्तन करने में व्यासपीठ के पुरोधा आध्यात्मिक नैतिक मनीषी ही सफल होते हैं, पहला उदाहरण मैंने यह दिया। वेन के शासनकाल में भी कोई ऐसा शासक नहीं था जो उसे चुनौती दे सके। भृगु महर्षी ने उसको चुनौती दी और शाप के द्वारा पुर्यष्टक सहित जीवकला को उसके शरीर से निकाल कर उसे शव बना दिया। लेकिन मैं एक संकेत करना चाहता हूँ कि सांस्कृतिक धरातल पर आध्यात्मिक मनीषि ही स्वस्थ क्रान्ति लाने में समर्थ हैं। इसी के आधार पर आगे

कह सकता हूँ कि वशिष्ठ जी अगर ना होते तो रावण आदि के उन्मूलन का मार्ग प्रशस्त नहीं होता। व्यासपीठ के पुरोधा वशिष्ठ जी ने स्वस्थ क्रान्ति को उद्भासित किया विश्वामित्र जी ने स्वस्थ क्रान्ति को उद्भासित किया। द्वापर और कलि की संधि में वेदव्यास जी ने कंस, दुर्योधन आदि के दमन का मार्ग प्रशस्त किया। इसका अर्थ है **हमारी संस्कृति इस बात को उद्भासित करती है कि व्यासपीठ अगर सुरक्षित रहे, अपनी महिमा को प्रतिष्ठित रखने में समर्थ हो तो शासन तंत्र का शोधन उसी के द्वारा होता है।** कलिकाल में भगवान् शङ्कराचार्य का हम नाम ले सकते हैं, चाणक्य का नाम ले सकते हैं, समर्थ रामदास जी का नाम ले सकते हैं। इसी प्रकार से विक्रमादित्य की दृष्टि से विचार करें तो नवरत्नों का नाम लिख सकते हैं। अब तक मेरे प्रवचन का भाव यह निकला कि व्यासपीठ को विकृत करने की जो परम्परा चल पड़ी है स्वतंत्र भारत में उसी की यह विभीषिका है। आजा आँख फाड़ कर देखने पर भी गिने-चुने कोई प्रभावशाली सन्त नहीं दिखाई पड़ते जो किसी न किसी दल के गुप्त या प्रकट प्रचारक न रह गये हों। क्योंकि शासन तंत्र को व्यामोह प्राप्त है कि अगर मनुवादी शास्त्र सम्मत कोई आचार्य प्रतिष्ठित हो गये तो हमारी दाल नहीं गलेगी। एक तथ्य में संकेत के रूप में प्रस्तुत करना और उचित समझता हूँ । जैन महानुभाव, सिक्ख महानुभाव, बौद्ध महानुभाव मेरी बात को बहुत अपनत्वपूर्वक सुनें। **एक वटवृक्ष हो विशाल, उसकी एक-एक**

शाखा काट दी जाये तो शाखा तो मर ही जाती है, वट वृक्ष की शोभा भी, विशालता भी विलुप्त होने लगती है। इसी प्रकार से जैन तंत्र, बौद्ध तंत्र, सिक्ख तंत्र ये सब जो सनातन वैदिक आर्य सिद्धांत से दूर कर दिये गये हैं छल बल डंके की चोट से, 25वीं धारा की धज्जि उड़ा करके, यह उनके अस्तित्व और आदर्श पर तो प्रहार है ही, साथ ही साथ हमको दुर्बल बनाने का प्रकल्प है। मैं बहुत ही अपनत्वपूर्वक, उदारता पूर्वक और संविधान की सीमा में, वेदादि शास्त्रों की सीमा में एक अनुरोध करना चाहता हूँ - विश्व में जितने सिक्ख महानुभाव हैं, जैन महानुभाव हैं, इसी प्रकार से जो बौद्ध महानुभाव हैं जो पूर्व जन्म, पुनर्जन्म में आस्था रखते हैं, प्रणव या ओंकार में आस्था रखते हैं, वे अपनेआप को सनातन हिन्दू के रूप में उद्भासित करें तो जनसंख्या की दृष्टि से हिन्दू विश्व में कम से कम दूसरे स्थान पर आ जायेगा। साथ ही साथ विज्ञान, दर्शन और व्यवहार में सामञ्जस्य साध करके हम सबके हित का मार्ग प्रशस्त करेंगे तो पूरा विश्व हमारे सिद्धांत के ऊपर लट्टू हुए बिना नहीं रहेगा। उदाहरण आप ले लीजिये - [**सनातनियों का जो वेद आदि शास्त्रसम्मत कृषि विज्ञान, भोजन विज्ञान है, आवास विज्ञान है, शिक्षा, रक्षा, स्वास्थ्य, उत्सव, त्योहार, रक्षा, सेवा, न्याय, इत्यादि के प्रकल्प हैं इस रॉकेट, कंप्यूटर, एटम और मोबाइल के युग में भी दूसरा कोई प्रकल्प किसी तंत्र का इसके सामने टिकता नहीं।**] विवाह का ही प्रकल्प ले लीजिये, न्याय का ही प्रकल्प ले लीजिये.......

इसका अर्थ है कि हमारी भोजन, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, रक्षा, सेवा, न्याय, विवाह आदि के जो भी प्रकल्प हैं, जो भी हमारी परियोजनायें हैं वो इस रॉकेट, कंप्यूटर, एटम और मोबाइल के युग में भी सर्वोत्कृष्ट हैं। ऐसी स्थिति में विचार करने की आवश्यकता है कि हम सनातन शास्त्रों के आधार पर इन सब तथ्यों को समझें और कम से कम भारत, नेपाल और भूटान आदि देशों में उसे क्रियान्वित करने का प्रकल्प चलावें। जहाँ तक रक्षा की बात है सुन लीजिये ध्यानपूर्वक - द्रोणाचार्य ब्राह्मण होकर के भी धनुर्वेद आदि में पारंगत थे या नहीं? परशुराम जी ब्राह्मण होकर के भी धनुर्वेद आदि में पारंगत थे या नहीं? विश्वामित्र जी ब्रह्मर्षि होने के बाद भी धनुर्वेद आदि में पारंगत थे या नहीं? **महाभारत में लिखा है कि कोल, भील, किरात आदि जो हैं (लड़ाकू कौम), इनको रक्षा की दृष्टि से बुलंद करना चाहिये। जब देश की सुरक्षा पर कहीं से आंच आवे तो इनको भी आगे करना चाहिये। क्षत्रिय तो योद्धा भीष्मादि की तरह होते ही थे, तो मैंने एक संकेत किया। हमारे यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अन्त्यज सब के सब सैनिक होते थे। सबको सेना का प्रशिक्षण अनिवार्य होता था। महाभारत का अनुशीलन कीजिये ... अगर अपने अस्तित्व और आदर्श पर आंच आ जाये तो ब्राह्मण को भी शस्त्र ग्रहण करना चाहिये। क्षत्रिय तो योद्धा होते ही हैं, वैश्यों को भी शस्त्र ग्रहण करना चाहिये। जब हमारी ये परम्परा थी तो कहीं से आंच आने की संभावना नहीं थी।** मैं एक संकेत करता हूँ , प्रायः

साल में दस बीस बार यह उदाहरण देता हूँ ... ये भुजदण्ड हैं - शरीर के किसी अंग या प्रत्यंग पर वार की संभावना हो तो टूटने फूटने की चिंता किये बिना अपने आप को आगे कर देते हैं। इसी प्रकार... इन में यह क्षमता कहां से आई? परम्परा प्राप्त निसर्ग सिद्ध संस्कार सम्वेत ये भुजदण्ड हैं। **जब क्षत्रियोचित ओज, तेज से व्यक्ति संपन्न होते थे तो भारत की ओर (आजकल के भारत नहीं, बृहद भारत की ओर) कोई आंख उठा कर देखने में समर्थ नहीं होता था। जब दिशाहीन अहिंसा को प्रोत्साहित किया गया, वर्णाश्रम निरपेक्ष अहिंसा को प्रोत्साहित किया गया, हमारा क्षात्र बल दुर्बल होने लगा तब से भारत की परतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हो गया।**

एक संकेत करना चाहता हूँ , व्याख्या नहीं करूँगा... जनसंख्या के सन्तुलन की दृष्टि से शिक्षा, रक्षा, अर्थ और सेवा के प्रकल्प, स्वच्छता के प्रकल्प सदा सन्तुलित रूप में सबको प्राप्त हों इस दृष्टि से जो परम्पराप्राप्त सनातन वर्णाश्रम व्यवस्था थी उसकी धज्जि उड़ाने के कारण, उसके प्रति अनास्था उत्पन्न करने के कारण इस देश की यह दुर्व्यवस्था हुई है। अगर ब्राह्मण ब्राह्मणोचित ढंग से रहने दिए जाते तो ३/४ जीवन उनका त्यागमय, तपोमय होता, गृहस्थाश्रम में भी वो बहुत संयत ढंग से रहते तो देश में इस प्रकार की दुर्व्यवस्था नहीं होती। क्षत्रियों को कहा गया संन्यास की ओर मत देखिए, संन्यास का दरवाज़ा मत खटखटाइये। अगर आप भी

संन्यासी हो जायेंगे तो राष्ट्र की रक्षा चरमरा जायेगी। वैश्यों से कहा गया कि आप वानप्रस्थ, संन्यासी होने का प्रयास मत कीजिये, गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त कीजिये, गृहस्थाश्रम तक सीमित रहिए ताकि कृषि, गौरक्ष, वाणिज्य इत्यादि देश के अर्थ प्रकल्प सुरक्षित रहें। इसमें कोई विसंगति न आवे, सन्तुलन बिगड़े नहीं। शूद्रों से कहा गया, सबसे ऊँचा दायित्व सेवा का, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग आपको प्राप्त है। अगर आप भी गुरुकुल का, वानप्रस्थाश्रम का, संन्यास आश्रम का दरवाज़ा खटखटायेंगे तो सेवा के प्रकल्प, कुटीर उद्योग के प्रकल्प, लघु उद्योग के प्रकल्प सब लुप्त हो जायेंगे। **तो शिक्षा की दृष्टि से, रक्षा की दृष्टि से, अर्थ की दृष्टि से, सेवा की दृष्टि से, स्वच्छता की दृष्टि से जो भी हमारे प्रकल्प थे उनके प्रति छल बल डंके की चोट से अनास्था उत्पन्न कर दी गई, उसी की विभीषिका हमारे सामने प्राप्त है।**

एक संकेत और मैं कर देना चाहता हूँ , थोड़ा विचार करिये। अभी महानुभावों ने शिक्षा की बात उठाई। नीति और अध्यात्म विहीन शिक्षा पद्धति आजकल क्रियान्वित है। और संकेत करना तो आवश्यक है, आप जानते भी हैं, थोड़ा अपने अनुभव को स्थान दीजिये - जिस देश में हर व्यक्ति बाज़ार का सौदा बनाने के लिये ही उत्पन्न किया जाता हो, हर व्यक्ति का लक्ष्य बनाया जाता हो विद्यालय के माध्यम से कि बाज़ार का सौदा बनो, उस देश का

उत्कर्ष कैसे हो सकता है? महाभारत में भीष्म जी का वचन है - ***'राज्यं पण्यं न कारयेत्'*** - राज्य को बज़ार का सौदा ना बनावे।" आज हर व्यक्ति बाज़ार का सौदा बनाया जा रहा है। विद्यालय में आप बच्चों को भेजते हैं, बालिकाओं को भेजते हैं। पढ़ाई पर पचास लाख रूपये खर्च हो तो कम से कम 50 करोड़ पर हाथ मारने में वह समर्थ हो। जहाँ हर व्यक्ति ही बाज़ार का सौदा बनाया जाता है तो पूरे भारत के आर्थिक उत्कर्ष का प्रकल्प भी इन मंत्रियों के पास क्या है? भारत को बाज़ार का सौदा बना दो, इसके अतिरिक्त इनके जीवन में अर्थ की कोई मीमांसा ही नहीं है। पृथ्वी अर्थ है, जल अर्थ है, तेज अर्थ है, वायु अर्थ है, आकाश अर्थ है और जितने मनुष्य हैं अगर वो स्वाभाविक रूप से मानवोचित शील से सम्पन्न रहें तो वे अर्थ हैं। लेकिन विचार करके देखा जाये तो पृथ्वी को, जल को, तेज को, वायु को, आकाश को विकृत करने का प्रकल्प चल रहा है। अर्थ के जितने स्रोत हैं उनको विकृत करने का प्रकल्प चल रहा है। **अगर कोई व्यक्ति एमएलए / एमपी की टिकट प्राप्त करता है 10 लाख रुपया देकर और जीत भी जाता है तो कम से कम वो 25 करोड़ / 30 करोड़ पर हाथ मारे बिना नहीं रह सकता। आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। व्यक्ति की संरचना ही राष्ट्र और विश्व के शोषण के लिये जहाँ की जाती है, वहाँ किसी प्रकार का उत्कर्ष कैसे हो सकता है?** इन सब तथ्यों पर भी विचार करनेकी आवश्यकता है।

साथ ही साथ मैं यह कहना चाहता हूँ .... अभी देखिये देश की स्थिति... कोरोना, यह जो रोग है...महामारी, शासनतंत्र ने अनुग्रह पूर्वक कहा.. एक मरीज पर इतना.. लेकिन अब चिकित्सक लोग कितने शोषक हो गये हैं, ध्यान देने की आवश्यकता है। जिस किसी को कह देते हैं कोरोना का बीमार है, उसके नाम पर उनका घर तो भर रहा है लेकिन देश का क्या होगा? बाढ़ की समस्या बिहार आदि में 50 वर्षों से नहीं 100 वर्षों से है। अगर शासन तंत्र दक्षता का परिचय दे तो बाढ़ की कोई ऐसी समस्या नहीं है... हम विज्ञान भी जानते हैं... मैं संकेत करना चाहता हूँ ... बाढ़ की कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसको हम दूर ना करें लेकिन हर वर्ष बाढ़ आएगी तो उससे अमुक-अमुक के जेब भरेंगे... इसका मतलब हर व्यक्ति को शोषक बनाने का जहाँ पर अभियान है वहाँ राष्ट्र का सुमङ्गल कैसे हो सकता है? **व्यक्ति की संरचना जिस शिक्षा पद्धति के आधार पर होती है वह देहात्मभावभावित है। देह के नाश से जीवात्मा का नाश नहीं होता, देह के भेद से जीवात्मा में भेद की प्राप्ति नहीं होती, यह सब तो कोई प्रकल्प शिक्षा पद्धति में है ही नहीं।**

एक और संकेत करना चाहते हैं कि कितना आतंकवाद है स्वतंत्रता के बाद कि हमारे मठ-मंदिर भी हमारे पास नहीं हैं। मैं एक शङ्कराचार्य के पद पर प्रतिष्ठित हूँ ...हमारा मठ भी शासनतंत्र के

अधीन, जगन्नाथ मंदिर भी शासनतंत्र के अधीन। इसका अर्थ क्या है? किसी राजा के किले पर अगर दूसरे का कब्ज़ा हो जाये तो राजा सुरक्षित कैसे रहेगा? **मठ और मंदिर धार्मिक, आध्यात्मिक केन्द्र हैं। छल बल डंके की चोट से स्वतंत्र भारत में, विशेषकर सनातन धर्मावलम्बियों के जो मठ-मंदिर हैं उन पर दिशाहीन सेक्युलर शासनतंत्र का अधिपत्य है। इसका अर्थ है कि हम अपने किले से दूर कर दिये गये छल बल डंके की चोट से। हमारी शिक्षा, रक्षा आदि के प्रकल्प चलते थे मठ मंदिरों से लेकिन वो मठ मंदिर भी हमारे पास नहीं हैं, शासन तंत्र के पास हैं और शासन तंत्र भी हमारे पास नहीं है, किसी ना किसी गुप्त या प्रकट बाह्य तंत्र से प्रभावित है।** मान लीजिए कोई व्यक्ति कहे "मेरा जूता है जापानी, पतलून इंग्लिशस्तानी, सर पे लाल टोपी सोहे, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी" कहाँ से हिंदुस्तानी दिल लाओगे? घुमा फिरा के जो शोषक मंत्री नहीं हैं वे भी उस प्रकल्प को क्रियान्वित कर देते हैं जिस प्रकल्प के गर्भ से विस्फोट निकलता है क्योंकि पृथ्वी, पानी, प्रकाश, पवन, आकाश ये सब जो ऊर्जा के स्रोत हैं इनको विकृत किये बिना, क्षुब्ध किये बिना, कुपित किये बिना आजकल कोई विकास की परियोजना क्रियान्वित नहीं है। जब विकास की परिभाषा ही शासनतंत्र के उच्च से उच्च व्यक्ति को पता नहीं है तो विकास के नाम पर जो कुछ भी परियोजना क्रियान्वित होगी उसके गर्भ से विस्फोट निकलेगा जैसे कि ये बीमारी निकल आयी।

अर्थ की बात है - बहुत से महानुभावों ने कहा आर्थिक उत्कर्ष हो लेकिन आर्थिक उत्कर्ष तब हो न जब अर्थ की परिभाषा का ज्ञान हो ! मैंने कहा श्रीसूक्तम् के आधार पर - पृथ्वी अर्थ है, जल अर्थ है, तेज अर्थ है, वायु अर्थ है, आकाश अर्थ है और नीति-अध्यात्म से समन्वित और प्रयोक्ता मनुष्य अर्थ है। जब अर्थ की परिभाषा ही ठीक से मालूम नहीं तो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश आदि को बिल्कुल क्षुब्ध करने के प्रकल्प, विकृत करने के प्रकल्प को ही अर्थ कहा जा रहा है। तो अर्थ की परिभाषा भी विश्व में है नहीं, राजनीति की परिभाषा भी है नहीं.. इस दृष्टि से आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। गुण में दोष निकालना उचित नहीं है लेकिन अगर हम स्वस्थ दिशा नहीं दे सकेंगे तो विश्व का कल्याण कैसे होगा? तो हमने अब तक यह कहा कि... हमारे यहाँ.. जो भी.. ये कुछ महानुभावों ने यह भी कहा कि शङ्कराचार्य का यह दायित्व होता है और उसका निर्वाह करना चाहिये कि जो-जो अमुक-अमुक शासन काल में हमसे दूर चले गये उनको अपनाने का प्रकल्प चलाना चाहिये। मैंने प्रकल्प चलाया... आप भी सुन लीजिये.. जो भी हमारे सज्जन को यह पता है, गर्व है कि उनके पूर्वज हिन्दू थे और अमुक शासन काल में छल बल डंके की चोट से उनको विधर्मी बनाया गया, धर्मच्युत किया गया अथवा लोभ, भय के वशीभूत होकर वे धर्मच्युत हो गये लेकिन आज भी भरतपुर आदि क्षेत्र जो हैं, मुझे

अच्छी तरह मालूम है कि बहुत से ऐसे मुस्लिम सज्जन हैं जिनको अपने गोत्र का पता है, इष्टदेवी का पता है, इष्ट का पता है उनसे मैं अनुरोध करता हूँ कि वे अपने आप स्वेच्छा पूर्वक अपने पूर्वजों के मार्ग पर चलकर 100-200 की संख्या में घोषित कर दें कि हम हिन्दू हैं, उनके यहाँ जो विवाह की प्रथा है.. अभी भी तो वे आपस में विवाह करते हैं गोत्र आदि को बचा करके... विधर्मी कहे जाने पर भी विवाह की परम्परा उन्होंने अपनी संस्कृति के अनुसार रखी। और एक संकेत करता हूँ ऊपर की रोटी में सब का अधिकार, ऊपर की बेटी में नहीं अधिकार। इससे क्या होता है... वर्णसंकरता-कर्मसंकरता के चपेट से मुक्त रह करके हम अपने अस्तित्व आदर्श की रक्षा करने में समर्थ होते हैं। तो जो भी स्वेच्छा पूर्वक चाहते हैं कि हमारे पूर्वज हिन्दू थे वो हिन्दू होने के लिये..मैं शङ्कराचार्य के पद से उद्घोषित करता हूँ... वो 100-200 की संख्या में घोषित करें.. हज़ार - एक लाख की संख्या में कि हम अपने पूर्वजों के मार्ग पर चलना चाहते हैं.. उनके यहाँ विवाह की प्रथा भी सुरक्षित है उस ढंग से विवाह करें। और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इत्यादि रोटी में उनको सम्मिलित कर लें अर्थात हमारे यहाँ भोजन करने में तो सब अधिकृत होते हैं। ऊपर की रोटी में सबका अधिकार, ऊपर की बेटी से परहेज इसलिये करते हैं ताकि वर्णसंकरता-कर्मसंकरता न आ जाये। शेर आदि में भी अगर संकरता आ जाती है तो चीता इत्यादि संज्ञा हो जाती है..इसलिये अर्जुन को दो चिंता थी.. गीता उठा कर देखिए

कि हमारा पवित्र कुल कहीं वर्णसंकरता-कर्मसंकरता के चपेट में ना आ जाये। गीता का पहला अध्याय, तीसरा अध्याय, चौथा अध्याय.. श्री कृष्ण को भी यह चिंता थी कि क्षत्रिय कुल कर्मसंकरता के चपेट में न आ जाये, अर्जुन को भी चिंता थी... तो बहुत मर्यादित ढंग से आह्लाद पूर्वक, कोई द्वेष पूर्वक नहीं, हम सब को अपनाने के लिये तैयार हैं।

साथ ही साथ **हम संकेत करना चाहते हैं कि मुस्लिम तंत्र, क्रिश्चियन तंत्र, कम्युनिस्ट तंत्र हिंदुओं को अपना विरोधी ना समझें। हमारा उदात्त सिद्धांत ऐसा है कि जिस पर चलने पर हर व्यक्ति का जीवन काल में भी उत्कर्ष हो सकता है, लौकिक उत्कर्ष, पारलौकिक उत्कर्ष और परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है। यह हमारी संस्कृति की एक विचित्र महिमा है**। द्वेष पूर्वक नहीं, मुसलमान सज्जन, क्रिश्चियन सज्जन, कम्युनिस्ट सज्जन बहुत विस्तार पूर्वक अपनी समीक्षा करें कि उनकी आवश्यकता क्यों हुई? मैंने संकेत किया था एक महानुभाव के वक्तव्य के बाद.. फिर से आप सुन लीजिए... **सनातन वैदिक आर्य हिंदुओं ने नीति-अध्यात्म को वेद आदि शास्त्रों के अनुसार ठीक से समझा होता, उसके पालन करने में कोई त्रुटि नहीं होती, विसंगति नहीं होती तो विश्व में क्रिश्चियन तंत्र, कम्युनिस्ट तंत्र, मुस्लिम तंत्र की उद्भावना ही नहीं होती। अगर हम अपने स्वरूप को ठीक से समझें वेदादि शास्त्र

सम्मत विधि से देश, काल, परिस्थिति आदि का ध्यान रख कर के हम व्यक्तिगत जीवन को ढालें, सामाजिक संरचना का प्रकल्प चलावें तो अपनेआप मुस्लिम तंत्र, क्रिश्चियन तंत्र, कम्युनिस्ट तंत्र की उपयोगिता विलुप्त हो जायेगी।** मैंने पहले भी कहा था, आज भी मैं संकेत करता हूँ ... थोड़ा विचार करके देखिये- अगर कोई व्यक्ति दस पीढ़ी के लिये धन बटोरता है, अपने धन का सदुपयोग नहीं करता, दण्डाधिकारी का कर्तव्य है उसको दण्ड दे। अगर कोई निर्धन है, कार्य करने में सक्षम है, तपस्या या श्रम से बचता है, दाने दाने के लिये मोहताज है फिर भी निकम्मा बना रहता है, निठल्ला बना रहता है हाथ पर हाथ रखकर बैठता है, शासनतंत्र का दायित्व है उसे दण्ड दे। दण्ड क्या दे? मजबूत रस्सी से वजनदार पत्थर गले में बांध करके जलाशय में पटक दे। यह हमारे यहाँ श्रीमद्भागवत के सप्तम स्कंध के अनुसार, महाभारत के उद्योग पर्व के अनुसार कह रहा हूँ। यह जब प्रथा थी तो कौन कम्युनिज्म की धारा में बहता? हमारी प्रथा में जो विकृति आई उसका परिणाम कम्युनिज्म है। अगर हम अपनी प्रथा को विधिवत् क्रियान्वित करें तो कम्युनिज्म की उपयोगिता ही समाप्त हो जाये। महाभारत में दो-तीन जगह आया है.. असाधु जो हैं और धनाढ्य भी हैं, उनसे धन का अपहरण करके, विधिवत् छीन करके, उनकी बहू-बेटी के शील की रक्षा करते हुए, वो भी दाने-दाने के लिये मोहताज ना हो इसका ध्यान रखते हुए, अगर कोई व्यक्ति ऐसे असाधुओं से, धनाढ्य व्यक्तियों से

धन को छीन करके, उसका उपभोक्ता स्वयं ना होकर जहाँ - जहाँ अपेक्षा है उस धन की वहाँ वहाँ लगा देते हैं तो उनको मरने के बाद स्वर्ग मिलता है। कायव्य नामक डाकू का मैं नाम लेता हूँ ... कायव्य डाकू का नाम लेकर जो यात्रा करता है उसकी यात्रा सुमङ्गल होती है, महाभारत में लिखा है वेदव्यास जी ने। कायव्य में क्या विशेषता थी? कायव्य में यह विशेषता थी कि जो दस पीढ़ी के लिये धन इकट्ठा करते थे, जहाँ धन का उपयोग करना चाहिये वहाँ धन का उपयोग नहीं करते थे, उनको सूचना देता था वह कायव्य, फिर भी अगर वे नहीं मानते थे तो दल बल के सहित उनकी सम्पत्ति का अपहरण करता था, बहु बेटी के शील की भी रक्षा करते हुए, उनको भी दाने दाने का मोहताज ना बनाते हुए और उस लूटी हुई सम्पत्ति का अपने लिये उपयोग ना करते हुए जहाँ जहाँ आवश्यकता थी वहाँ वहाँ वितरित कर देता था। इसका अर्थ क्या हुआ? इसका अर्थ यह हुआ कि अगर हम अपने शास्त्रीय मार्ग पर चलते तो न कम्युनिस्टों की जरूरत होती, ना मुस्लिम तंत्र की जरूरत होती, ना क्रिश्चियन तंत्र की जरूरत होती। **ये जो हमारे हिंदुओं को सेवा के नाम पर छल बल डंके की चोट से क्रिश्चियन आदि बनाया जा रहा है, ये सब प्रकल्प की तो दाल ही नहीं गलती और शासन तंत्र की सहभागिता न हो, कलेक्टर, एस पी, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री इत्यादि की अंदर से भावना न हो तो हिन्दू अपने सिद्धांत को क्यों छोड़ेगा? दार्शनिक धरातल पर भी हम समृद्ध हैं और हमारा कोई**

ऐसा प्रकल्प नहीं जो किसी का शोषक हो। हमारा ऐसा कोई प्रकल्प ही नहीं है जो किसी के लिये अहितकर हो। कौन समझदार हिन्दू धर्म परिवर्तन कर सकता है या धर्मच्युत हो सकता है? इसका मतलब शासनतंत्र की सहभागिता के कारण, अंग्रेज़ों की कूटनीति के कारण हिंदुओं को छल बल डंके की चोट से विधर्मी बनने के लिये बाध्य किया जाता है।

अब एक संकेत करता हूँ - **एक रुपया, एक घण्टा हर हिन्दू परिवार से निकले। अगर एक व्यक्ति दस रूपये निकालता है, नौ ऐसे निर्धन परिवार के व्यक्ति जो ₹1 भी रोज़ सामाजिक कार्य के लिये, सांस्कृतिक कार्य के लिये नहीं निकाल सकते, तो नौ रुपए उनकी ओर से, एक रुपया अपनी ओर से, दस रूपये... औसतन एक हिन्दू परिवार से एक रुपया रोज़ निकले और एक घण्टा समय निकले, उस रुपए का, उस समय का उपयोग उसी क्षेत्र को सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, स्वावलंबी आदि बनाने में हो तो किसी प्रकार की कोई विसंगति हमारे यहाँ प्राप्त ही नहीं हो सकती। इसका अर्थ हमारा जीवन सबके लिये हितकर हो, हम किसी के शोषक न हों।** यह जो हमारी परम्परा प्राप्त शिक्षा पद्धति थी उसमें विकृति लायी गई है जिसके फलस्वरूप यह सब विसंगति है। और एक विचित्र बात है - देखिए ऊपर-ऊपर काम करना अलग चीज़ है.... भारत की स्थिति क्या है... किसी तंत्र पर कटाक्ष करना उचित

नहीं है लेकिन एक शहर का नाम लेता हूँ, उसका नाम है मेरठ (उत्तरप्रदेश में)। एक उसका हिस्सा खाली था जिससे परिस्थिति वश हिन्दू कल कुशल भागकर निकल सकते थे, बिहार के हथकरघा के व्यक्तियों को बुलाकर उधर बसाया गया योजनाबद्ध ढंग से, कदाचिद् किसी के प्रमाद से, उन्माद से मेरठ के हिंदुओं को भागने की आवश्यकता हो तो एक भी हिन्दू जीवित नहीं भाग सकते। काशी की बात ले लीजिये...घटना मैं नहीं सुनाऊंगा, मुझे मालूम है सब। काशी की संरचना इस ढंग से विकृत मस्तिष्क के व्यक्तियों ने, मानवोचित शील के द्रोही व्यक्तियोंने चलाया,....हर कौम में, हर वर्ग में अच्छे व्यक्ति होते हैं... काशी की पोल पट्टी में खोलता हूँ ... एक भी हिन्दू परिवार जीवित नहीं निकल सकता काशी की सीमा के बाहर... पूरे देश में उस ढंग से संरचना की गई है.... आप चीन से सीमा रक्षा कर लेंगे, मान लो पाकिस्तान से... अब नेपाल से भी चुनौती प्राप्त है। लेकिन विचार ये है कि चप्पे-चप्पे पर जो 75 वर्षों से, योजनाबद्ध ढंग से, स्वतंत्रता के पहले से ही जो अभियान चलाया जा रहा है, किसको-किसको निगृहीत करेंगे? एक संस्मरण सुनाता हूँ ... 7 वर्षों तक... मेरे सामने की बात है... पंजाब में जो कुछ हुआ ताण्डव नृत्य.. उसके बाद कोई मुख्यमंत्री आए.. बिचारे वो अंत में मार भी दिये गये... एक सूक्ष्म रूप से गुप्तचर विभाग को नियुक्त किया गया कि ये जो 7 वर्षों तक आतंकवाद का ताण्डव नृत्य पंजाब में चला, इसमें अमुक वर्ग के, तंत्र के किस-किस व्यक्ति का हाथ

था? गुप्तचर विभाग की गुप्त रिपोर्ट सुन लीजिये... किसका हाथ नहीं था? इसका मतलब क्या है? हमारे घर में ही हमारे घर को नष्ट करने के लिये व्यक्ति तैयार कर दिये गये हैं जहाँ हर व्यक्ति बिकने के लिये तैयार है (अपवाद छोड़ दीजिए)। हर व्यक्ति राष्ट्रद्रोह की भावना से भावित है, हर व्यक्ति को ही राष्ट्र का शोषक बनाने के लिये सारा अभियान चल रहा है। इसलिये आमूलचूल पूरे भारत की संरचना की आवश्यकता है। हमारी प्राचीन संस्कृति दार्शनिक, वैज्ञानिक, व्यवहारिक धरातल पर भी सर्वोत्कृष्ट है, इसको बताने की आवश्यकता है विश्वस्तर पर। ये नहीं कि हिंदुओं का शासन होगा तो हिन्दू किसी का गला काट देगा, मार देगा, नष्ट कर देगा। सबको अभय दान देता हुआ अस्तित्व और आदर्श की रक्षा का प्रकल्प चलाएगा। सबके हित में मार्ग प्रशस्त कर सकेगा। इसलिये व्यासपीठ को दिशाहीन करने की.. मनुवाद कह करके... मुझे बहुत प्रसन्नता है ये सुरक्षा को लेकर भी बैठक हुई, विज्ञान को लेकर भी बैठक हुई, अर्थशास्त्र को लेकर भी बैठक हुई, राजनीति को लेकर भी बैठक हुई।

राजनेताओं ने भरसक प्रयास किया कि मन्वादि शास्त्रों के प्रति, वेदादि के प्रति, हमारे वैदिक महर्षियों के प्रति अनास्था उत्पन्न कर दें। लेकिन राजनेताओं ने भी, राजनीति के विशेषज्ञ महानुभावों ने भी, विविध दल के राजनेताओं ने भी जो भाव व्यक्त किया, अर्थशास्त्रियों ने, वैज्ञानिकों ने जो भाव व्यक्त किया, आज आप

महानुभावों ने जो व्यक्त किया है उससे स्पष्ट होता है कि आपके हृदय में वेदादि शास्त्रों के प्रति, महर्षियों के प्रति पूर्ण आस्था थी। तो हमने एक संकेत किया कि किसी भी क्षेत्र को ले लें... [भोजन सम्बन्धी क्या कठिनाई है, वस्त्र सम्बन्धी क्या कठिनाई है, आवास सम्बन्धी क्या कठिनाई है...इस प्रकार से अगर हम विचार करें तो योजनाबद्ध ढंग से.. **मैं तो योजना बता सकता हूँ ... 5 वर्ष की सीमा में भारत का कोई भी परिवार और व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से विपन्न नहीं रह सकता। हमारे पास अर्थशास्त्र की दृष्टि से भी अभियान है।**] मैं अपनी प्रशंसा नहीं करता, न सुनना चाहता हूँ ... लेकिन जब विश्व बैंक हमसे अपनी सारी गुत्थी सुलझाने के लिये परामर्श नहीं मार्गदर्शन ले सकता है तो क्या भारत सरकार को मैं मार्गदर्शन नहीं दे सकता? [प्रांतीय सरकार को मैं मार्गदर्शन नहीं दे सकता? आप कान खोल कर सुन लीजिए भारत में अभी ऐसी क्षमता नहीं है कि अपनी मेधा शक्ति, रक्षा शक्ति, वाणिज्य शक्ति, अर्थ शक्ति, और श्रम शक्ति से लाभान्वित हो सके।] फिर से सुनिये कान खोल कर... कोई भी राजनैतिक दल हो... भारत की मेधा शक्ति भारत के हित में काम करने की स्थिति में नहीं है। भारत की मेधा शक्ति विकृत की जाती है, उपेक्षित की जाती है या अन्य तंत्र के काम में आ जाती है। भारत में अभी ऐसी क्षमता नहीं है कि अपनी मेधा शक्ति... अपने दल के मेधावी व्यक्तियों को भी पृथक् कर दिया जाता है। इससे क्या होगा? हर पार्टी की यही स्थिति है... चाहे कांग्रेस हो या भाजपा हो,

समाजवादी हो, बसपा हो.. हर पार्टी की भारत में ये स्थिति है... अपनी पार्टी के भी अनुभवी व्यक्ति को, मेधावी व्यक्ति को किनारे कर दिया जाता है। जिस देश में अपनी मेधा शक्ति, रक्षा शक्ति, वाणिज्य शक्ति, श्रम शक्ति के उपयोग की क्षमता ही नहीं है... व्यक्ति का वर्चस्व, दमन की नीति... उस देश का उत्कर्ष कैसे हो सकता है? मैंने अब तक जो कहा... आलोचना नहीं है, निंदा नहीं है, मेरे साथ वाले जानते हैं... **विश्व में कहीं कोई समस्या है, भारत में कहीं कोई समस्या है मैं हृदय पर हाथ रख कर बोलता हूँ हमारी त्रुटि है। अगर हम धर्माचार्य पद पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सद्भावपूर्वक, संवाद पूर्वक अपने दायित्व का निर्वाह किया होता तो देश की ऐसी स्थिति क्यों होती?** एक पोप महोदय.. क्रिश्चियन तंत्र पर ही नहीं हिन्दू तंत्र पर भी छाए हुए हैं। भारत के प्रधानमंत्री वाजपेई जी थे... पोप ने एक हुंकार किया तो भगे उसके पास क्षमा मांगने के लिये। इसका मतलब... हम चार-चार शङ्कराचार्य हैं, आपको सुनकर आश्चर्य होगा..... आतंकवादी और बिल्कुल पार्टी के पक्षधर व्यक्तियों को भी शङ्कराचार्य के रूप में ख्यापित किया जा रहा है। व्यासपीठ को भी विकृत करके नष्ट करने का अभियान है। तो जिस देश में षड्यंत्र ही षड्यंत्र है, विकास तो ऊपरी एक चीज़ है, अंदर से देश को अत्यंत खोखला कर दिया गया, लेकिन निराशा की बात नहीं। अंत में एक संकेत करता हूँ - यह श्री राम, कृष्ण की भूमि है। हमने कंस के शासनकाल को देखा, इसी प्रकार से हिरण्यकशिपु आदि के

शासनतंत्र को देखा, रावण के शासन तंत्र को देखा, इस प्रकार की विभीषिका आई और सनातन परम्परा के सन्तों ने, महर्षियों ने, ऋषियों ने, उस विभीषिका को दूर करके भव्य भारत की संरचना की। **मैं कोई भावुकता पूर्वक ही नहीं कहता, बहुत ही उत्तम ढंग से कहता हूँ ...एशिया महाद्वीप के अंतर्गत प्रथम चरण में कम से कम भारत, नेपाल, भूटान को हिन्दू द्वीप के रूप में उद्भासित हों।** हिन्दू शब्द प्राचीन है, यह भी कान खोल कर सुन लीजिए... अमुक अमुक तंत्र जब भारत में नहीं थे... विदेशी यात्री जो आए उनके यहाँ हिन्दू शब्द का प्रयोग है...हिंदुकूट, हिन्दू पर्वत इत्यादि। ऋग्वेद में भी हिन्दू शब्द का प्रयोग है, कालिका तंत्र में, मेदिनी तंत्र में, बृहस्पति आगम में... हिन्दू शब्द भी हमारा बहुत प्राचीन है। हिन्दू का अर्थ होता है... हिमाचल से लेकर इंदु सरोवर... इसका मतलब क्या है? कन्याकुमारी तक का क्षेत्र हिन्दू। भगवत्पाद आदि शङ्कराचार्य महाभाग के द्वारा जो प्रतिष्ठित चार पीठ हैं.... कम से कम भारत में... यह जो चार पीठ हैं अभी भी भारत में ही विद्यमान हैं। आदि शङ्कराचार्य जी महाराज की दूरदर्शिता देखिये.... अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, अवन्तिका (उज्जैन), द्वारावती ये सात मोक्षदायिनी पुरियाँ और आठवीं जगन्नाथ पुरी... आठों पुरियाँ आजकल भारत की सीमा में हैं... चारों कोनों पर जो भगवान् शङ्कराचार्य महाभाग ने... पुरी तो साक्षात् धाम में है, द्वारका साक्षात् धाम में है... बदरीनाथ से सम्बद्ध ज्योतिर्मठ की, रामेश्वरम

से सम्बद्ध श्रृंगेरी मठ की जो उन्होंने स्थापना की, कम से कम चार पीठ भारत की सीमा में आज भी हैं, और आठों पुरियाँ भी भारत की सीमा में हैं। **भविष्य मुझको दिखता है कि गिने-चुने वर्षों में बहुत ही विप्लवविहीनता की दृष्टि से, सद्भावपूर्वक संवाद की दृष्टि से भारत की अखण्डता का मार्ग प्रशस्त होगा।**

नारायण

सबका भला हो

राम राम

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीगणेशाय नमः

राष्ट्ररक्षा सङ्गोष्ठी (अगस्त २०२०)

(दिवस २)

नारायणाखिलगुरो भगवन्नमस्ते
शिवाय नमः शिवलिङ्गाय नमः
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

मान्य महानुभावोंने बहुत ही व्यवस्थित विधा से सम्बद्ध विषय पर महत्वपूर्ण भावोंको व्यक्त किया। मेरे सामने एक विचित्र परिस्थिति है- मनोबल को उद्दीप्त करना आवश्यक है, मेरा दायित्व है। साथ ही साथ आत्मनिरीक्षण का मार्ग प्रशस्त करना भी उचित है। जिन तथ्यों की ओर वक्ताओं का, श्रोताओं का ध्यान केन्द्रित नहीं है, जाना कठिन भी है, राष्ट्र को सुरक्षित रखने के लिये उन तथ्यों की जानकारी आवश्यक है, उसे आप तक पहुँचाना भी मेरा दायित्व है। लेकिन मैं अनुरोध करता हूँ , संकेत करता हूँ मनोबल को दुर्बल करने की भावना मेरे हृदय में सम्भव ही नहीं है। गम्भीर मंथन की आवश्यकता है, आत्म निरीक्षण की आवश्यकता है और अपनी जानकारी को परिष्कृत करने की तथा बढ़ाने की भी आवश्यकता है। समय पर्याप्त हो चुका है फिर भी आप महानुभावों के उज्जवल

धैर्य को देखते हुए मैं कुछ भावों को प्रस्तुत करना उचित समझता हूँ। स्कंद पुराण में एक ही श्लोक दो बार प्रयुक्त हुआ है -

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभि धार्यते मही।।

काशी खण्ड के दूसरे अध्याय में, माहेश्वर कुमारिका खण्ड के दूसरे अध्याय में यह श्लोक सन्निहित है। इसके आधारपर **पृथ्वी के जो धारक सात तत्व हैं** उनका हमको बोध हो सकता है। **और शासनतंत्र का दायित्व होता है, सामाजिक संस्थानों का दायित्व होता है, हमारा-आपका दायित्व होता है कि उनके संरक्षण का मार्ग प्रशस्त हो। परन्तु विकास के नाम पर पृथ्वी के धारक उन सातों तत्वों का द्रुतगति से विलोप हो रहा है, योजनाबद्ध ढंग से उनमें विकृति लाई जा रही है। गौवंश, सदाचार-संयम सम्पन्न वेदज्ञ ब्राह्मण, वेद, सती साध्वी देवियाँ, सत्यवादी, निर्लोभ व्यक्ति, दानशील, ये जो सात तत्व हैं पृथ्वी के धारक हैं। जिन-जिन तत्वों के द्वारा शास्त्र सम्मत यज्ञ का सम्पादन होता है वे सब तत्व पृथ्वी के धारक सिद्ध होते हैं, क्योंकि यज्ञ के द्वारा ही चतुर्दश भुवनात्मक ब्रह्माण्ड का पोषण होता है।**

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही॥

अलुब्ध का अर्थ है निर्लोभ व्यक्ति, वो भी पृथ्वी का धारण करता है। मैं व्याख्या न करके केवल संकेत करता हूँ - प्रामाणिक रीति से अगर विचार करें तो द्रुतगति से इन सातों में विकृति लायी जा रही है और इनका विलोप भी हो रहा है। एक भवन को साधने वाले अगर सात खम्भे हों, उन सातों को तोड़ दिया जाये या दीवालों को तोड़ दें तो भवन की सुरक्षा कैसे हो सकती है? तो मैंने संकेत किया - जिनके आधार पर पृथ्वी टिकी हुई है... **पृथ्वी का अर्थ होता है केवल पृथ्वी ही नहीं, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, स्थावर-जङ्गम प्राणी ये सब मिलकर के राष्ट्र होते हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश... इसी प्रकार से स्थावर-जङ्गम प्राणियों का समुदाय ही तो राष्ट्र है। तो मैंने संकेत किया कि पृथ्वी को धारण करने वाले जितने तत्व हैं, योजनाबद्ध ढंग से विकास के नाम पर वे द्रुत गति से विकृत किये जा रहे हैं, विलुप्त होने के कगार पर पहुँच गये हैं। ईश्वर के संकल्प से बीज की रक्षा तो हो रही है लेकिन योजनाबद्ध ढंग से इनको विकृत करने, विलुप्त करने का जो मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है वह अभिशाप स्वरूप है।** दूसरी बात मैं फिर महाभारत के अनुसार कहता हूँ , सावधान! -

धर्मः कामश्च कालश्च वसुर्वासुकिरेव च।
अनन्तः कपिलश्चैव सप्तैते धरणीधराः ॥

प्रकारांतर से पृथ्वी को धारण करने वाले सात तत्वों का वर्णन भगवान् वेदव्यास जी ने महाभारत में किया।

धर्मः - धर्म पृथ्वी का धारक है। पृथ्वी का अर्थ मैंने कर दिया। छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार यह जो भूलोक है, इसमें रहने वाले जो प्राणी हैं विशेषकर मनुष्य, शेष तेरह भुवनों के पोषक यही सिद्ध होते हैं। पृथ्वी का अर्थ है ... अंतिम कार्य पृथ्वी है, और कारण की अनुगति कार्य में होती है, इस दृष्टि से पृथ्वी कहने पर पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश साथ ही साथ अव्यक्त और अंत में परमात्मा इन सबका ग्रहण होता है। तो ध्यान दें '**धर्मः**' धर्म पृथ्वी का धारक है। द्रुतगति से धर्म के प्रति अनास्था उत्पन्न की जा रही है। बुरा न मानें, एक सज्जन सुप्रीम कोर्ट की भाषा को उद्धृत कर रहे थे अपने शब्दों में - 'हिन्दू कोई धर्म नहीं है, एक विचारधारा है'। परिस्थिति विशेष में मान्य उच्चतम न्यायालय ने इस प्रकार के वाक्य का प्रयोग किया था लेकिन धर्म शब्द से परहेज क्यों है, इस पर विचार करने की आवश्यकता है। मत्स्य पुराण और महाभारत के अनुसार, अमरकोश आदि के अनुसार...दो-तीन मिनट की सीमा में धर्म के प्रति कुछ महत्व बुद्धि उत्पन्न हो इसके लिये मैं कुछ वाक्यों को उद्धृत करना उचित समझता हूँ - **धारणात् धर्मः**। धर्म के दो भेद हैं। करोड़ों पृष्ठों में धर्म पर कोई ग्रंथ लिखा जायेगा तो उसका सारांश होगा - मैं दो तीन वाक्यों में प्रकट कर देना उचित समझता

हूँ **धारणात् धर्मः**। जो धारक हो उसका नाम धर्म है। जो धारक होता है वह उद्धारक हो ही जाता है। पार्थिव प्रपञ्च को धारण करने वाली पृथ्वी है, पृथ्वी धर्म है। पृथ्वी को धारण करने वाला जल है, जल धर्म है। जल को धारण करने वाला तेज है, तेज धर्म है। तेज को धारण करने वाला पवन है, वायु धर्म है। पवन को धारण करने वाला अव्यक्त है जिसको माया / प्रकृति / प्रधान भी कहते हैं वह धर्म है। अंत में सब को धारण करने वाले भगवान् हैं.... भगवान् के बिना तो प्रकृति से लेकर पार्थिव प्रपञ्च तक किसी की सत्ता उपयोगिता ही सिद्ध नहीं है। इस दृष्टि से कठोपनिषद में भगवान् को, परमात्मा को या आत्मा को धर्म कहा गया है। इस ढंग से अगर विश्व स्तर पर धर्म की परिभाषा की जाये... **सिद्ध कोटि का धर्म** यही है **धारणात् धर्मः**। जिससे हमारे जीवन की रक्षा हो, हमारी सत्ता और उपयोगिता सिद्ध हो उसी का नाम धर्म है। जैसे हमारे शरीर में सात धातुएँ हैं... उन सातों धातुओं के बिना हमारे शरीर की रक्षा हो ही नहीं सकती, न सत्ता न उपयोगिता। तो इस ढंग से धर्म को परिभाषित करने की आवश्यकता है। सिद्ध कोटि का धर्म किसको कहते हैं - जो धारक हो। तो मैंने बताया पार्थिव प्रपञ्च से लेकर परमात्मा को हमारे शास्त्रों में धर्म कहा गया। **नास्तिक शिरोमणि भी अब अगर इस ढंग से धर्म को परिभाषित करें तो धर्म के प्रति आस्थान्वित हुए बिना नहीं रह सकता।**

दूसरा धर्म का प्रकार है **साध्य कोटि का धर्म**। यज्ञ, दान, तप, व्रत ये साध्य कोटि के धर्म हैं। साध्य कोटि के धर्म की उपेक्षा करके भी जीवन में त्याग का बल अभिव्यक्त नहीं हो सकता। द्रव्य का त्याग किये बिना न तो यज्ञ का सम्पादन हो सकता है, न दान का सम्पादन हो सकता है। यज्ञ करना है, दान देना है शास्त्रीय विधा से तो मुट्ठी खोलनी ही होगी, द्रव्य का त्याग करना ही पड़ेगा। और भोग का त्याग किये बिना तप की सिद्धि नहीं हो सकती है। भोग का त्याग किये बिना व्रत की सिद्धि नहीं हो सकती है। सुख का त्याग किये बिना तो तप नहीं हो सकता है। इसका अर्थ क्या है- जिनको पकड़ने के कारण हमारे जीवन में उदारता नहीं है, विश्व बंधुत्व का भाव नहीं है, उनको छोड़ने की आवश्यकता है। उनके त्याग का बल हमारे जीवन में चाहिये। तो यज्ञ और दान के माध्यम से द्रव्य के त्याग की भावना का उद्भव होता है। भोग का त्याग करेंगे तो क्या होगा? बिना भोग का त्याग किये तो व्रत का सम्पादन हो ही नहीं सकता है, भोग के प्रति हम चिपके हुए हैं तो व्रत का पालन हमें करना ही पड़ेगा। सुख के साथ हम चिपके हुए हैं तो हमको तप करना ही पड़ेगा। वर्णाश्रम धर्म का पालन करेंगे तो शिक्षा, रक्षा, अर्थ और सेवा के प्रकल्प सन्तुलित रहेंगे। मैंने अर्थ की गोष्ठी में.. वाजपेई जी को ध्यान होगा, एक वाक्य कहा था। कल्पना कीजिये ऐसी व्यवस्था की जहाँ हर व्यक्ति की जीविका जन्म से अरक्षित हो, जैसे कि आजकल। फिर से मैं बोलता हूँ ... ऐसी व्यवस्था की

कल्पना कीजिये... हाथ कंगन को आरसी क्या....जो आजकल है... जहाँ हर व्यक्ति की जीविका जन्म से अरक्षित है, वहाँ आर्थिक विपन्नता और अनावश्यक विषमता न हो ये संभव नहीं है। ध्यान गया? और शिक्षा, रक्षा, अर्थ, सेवा, स्वच्छता आदि के प्रकल्प, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग आदि के प्रकल्प सबको सन्तुलित रीति से सुलभ हों इस दृष्टि से भी वर्णाश्रम धर्म का पालन अत्यंत आवश्यक है। तो विशेष धर्म की भी उपयोगिता हो गई, वर्ण धर्म की उपयोगिता, आश्रम धर्म की उपयोगिता.. यज्ञ, दान, तप, व्रत की उपयोगिता अर्थात् साध्य कोटि के, अनुष्ठेय कोटि के जो धर्म हैं उनकी उपयोगिता भी हो गई। और सिद्ध कोटि का जो धर्म है वो तो पार्थिव प्रपञ्च से लेकर परमात्मा तक उसकी उपयोगिता सिद्ध है ही।

अभी धर्म के प्रति जो अनास्था उत्पन्न कर दी गई... लोग कहना पसंद नहीं करते कि मैं धार्मिक हूँ या धर्म आचरण... यह भी एक विचित्र बात है। मैंने कहा **धर्मः** - पृथ्वी को धारण करने वाला तत्व धर्म है। **कामः**- काम नामक पुरुषार्थ भी पृथ्वी का धारक है। स्वस्थ परम्परा, वंश परम्परा ...... ***धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ*** (गीता ७.११)

कालश्च - यह जो काल है न ये पृथ्वी का धारक है। सावधान ! जिस समय जिस कार्य का सम्पादन करना चाहिये कदाचित् उस

समय उस कार्य का सम्पादन नहीं किया जाता तो विस्फोट हो जाता है। काल पृथ्वी का धारक है। एक ही उदाहरण पर्याप्त है - संध्या की वेला में पतिव्रता होने पर भी दिति ने अपने पति को स्पर्श करने के लिये बाध्य कर दिया, इस स्पर्श के गर्भ से हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष दो आतंकवादियों को उसने जन्म दिया। उनके पिता श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ कश्यप जी.... लेकिन माता की चपलता के कारण, काल का ध्यान ना रखने के कारण विस्फोट हुआ। कैमुतिक न्याय से इस समय तो बिजली के कारण दिन और रात्रि की विभाजक रेखा विलुप्त है, किस समय किस कार्य का सम्पादन करना चाहिये इसका विवेक ही विलुप्त हो गया है। तो पृथ्वी को धारण करने वाला काल है। काल के बिना तो पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि ही नहीं हो सकती। धर्म का विलोप द्रुतगति से हो रहा है, धर्म के प्रति अनास्था द्रुत गति से उत्पन्न की जा रही है। धार्मिक व्यक्तियों को छल बल डंके की चोट से विविध प्रकार की यातना दी जा रही है। तो प्रश्न यह उठता है कि राष्ट्र का कल्याण कैसे होगा? राष्ट्र सुरक्षित कैसे रहेगा?

"धर्मः कामश्च कालश्च वसुर्वासुकिरेव च" स्थावर-जङ्गम.. इसी प्रकार से चल-अचल कह सकते हैं। सम्पत्ति के देवता हैं वसु और वासुकि। वसु और वासुकी का नाम लेकर महाभारत में सिद्ध किया कि अर्थ पुरुषार्थ जो है वह पृथ्वी का धारक है। बहुत ही दक्षता पूर्वक, विस्तार पूर्वक में कह सकता हूँ कि। अर्थ की दृष्टि से भी हम देखें तो पूरे विश्व में अर्थ का विलोप हो रहा है। फिर ध्यान

से सुनिए - **धर्म और मोक्ष नामक दो पुरुषार्थों का त्याग किया गया अर्थ और काम के नाम पर। काम के नाम पर विभीषिका और पिशाच वृत्ति पल रही है पूरे विश्व में।** उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं सबको मालूम है। **और अर्थ के नाम पर अनर्थ की उद्भावना हो रही है।** केवल मैं संकेत करता हूँ , समय की सीमा में बहुत कुछ कहने की भावना हो रही है। श्रीमद्भागवत के एकादश स्कंध के 23 वें अध्याय में हिंसा, चोरी, स्पृहा इत्यादि अर्थ के 15 प्रकार के अनर्थों का वर्णन है। कदाचित् कोई 15 प्रकार के अनर्थों से विमुक्त अर्थ को कर सके तो अर्थ है नहीं तो अर्थ के नाम पर अनर्थ है। मैं कहने में संकोच कर रहा हूँ ... आजकल आर्थिक दृष्टि से प्रगति के जितने पक्षधर हैं, वेदादि शास्त्र की दृष्टि से विचार करें तो उनको अर्थ की परिभाषा ही पता नहीं है। पृथ्वी अर्थ है, जल अर्थ है, तेज अर्थ है, वायु अर्थ है, आकाश अर्थ है... परम अर्थ परमात्मा की जो भी अभिव्यक्ति है, परम अर्थ परमात्मा की प्राप्ति में साक्षात् या परम्परा से जिसका उपयोग और विनयोग है, उसका नाम अर्थ है। इसका अर्थ यह है कि अर्थ की दृष्टि से भी आज हम दुर्बल हैं। पूरे विश्व से अर्थ नामक पुरुषार्थ का विलोप हो रहा है। आपको सुनकर आश्चर्य होता होगा... मैं डंके की चोट से कहना उचित समझता हूँ ... 99% अर्थ का स्वरूप तो पूरे विश्व से विलुप्त हो चुका है। वेद आदि शास्त्रसम्मत कर्म कांड, उपासना कांड में अद्भुत विधा से अर्थ को अभिव्यक्ति करने की क्षमता है। वेदादि शास्त्र सम्मत कर्मकांड,

उपासना कांड के प्रति अनास्था और इनके विलोप के कारण 99% अर्थ के स्त्रोत का तो विज्ञान ही विश्व को नहीं है। ब्रह्मलोक की प्राप्ति किसको होगी? ब्रह्मलोक सबसे वैभवपूर्ण है या नहीं? ऊपर के जितने लोक हैं वो तो वैभवपूर्ण हैं। उन लोकों की प्राप्ति कैसे होगी? वेद आदि शास्त्रसम्मत कर्मकांड, उपासना कांड का निर्वाह करने के कारण। इसका अर्थ क्या है? 99% अर्थ के स्त्रोत का विज्ञान भौतिक वादियों को हो ही नहीं सकता है। वेद आदि शास्त्रसम्मत कर्म और उपासना के प्रति जिनके हृदय में अनास्था है या बोध ही नहीं है। उनकी दृष्टि में तो 99% अर्थ का स्त्रोत ही बंद है। 1% जो अर्थ का स्त्रोत है पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश इनको भी छल बल डंके की चोट से... विकास को इस ढंग से परिभाषित और क्रियान्वित किया गया है कि इनको विकृत कर दिया गया, क्षुब्ध कर दिया गया, कुपित कर दिया गया तो अर्थ नामक पुरुषार्थ का भी विलोप हो रहा है। मैंने कभी दिल्ली में... मान्य अन्य शङ्कराचार्यों की उपस्थिति में भी कहा था कि अमेरिका सावधान, जब बुश दोबारा राष्ट्रपति होने वाले थे - "अमेरिका आर्थिक दृष्टि से विपन्न होने वाला है"। मेरे अतिरिक्त अन्य शङ्कराचार्य महाभाग हँस दिए। लेकिन मैंने कहा मेरी बात सत्य होगी और सत्य हो गई। तो मैंने एक संकेत किया कि पृथ्वी के धारक वसु और वासुकि का नाम लेकर महाभारत में बताया गया कि अर्थ भी पृथ्वी का धारक है लेकिन द्रुतगति से अर्थ का विलोप हो रहा है।

अनन्तः कपिलश्चैव - ये दो आचार्य हैं। परा, अपरा विद्या के आचार्य हैं अनंत और कपिल। शेषनाग और कपिल, नाम तो आपने सुना ही होगा। प्रमाणिक रीति से विचार करें तो मोक्ष नामक पुरुषार्थ के ये ऋषि हैं। मोक्ष नामक पुरुषार्थ का विलोप भी द्रुत गति से हो रहा है। अब निष्कर्ष सुनिए - **धर्म का विलोप, अर्थ का विलोप, काम का विलोप, मोक्ष का विलोप, और काल अत्यंत कुपित, ये विकास है या ह्रास? राष्ट्र कैसे सुरक्षित रहेगा धर्म के बिना, अर्थ के बिना, काम के बिना, मोक्ष के बिना, काल का सदुपयोग किये बिना? इसका अर्थ क्या है- विकास विकास विकास विकास रटते रहिये लेकिन राष्ट्र को सुरक्षित रखने की कोई विधा ही तो नहीं है, खोखलापन हुआ या नहीं? धर्म रहित, अर्थ रहित, काम रहित, मोक्ष रहित पुरुषार्थचतुष्टय विहीन राष्ट्र की संरचना कर रहे हैं, राष्ट्र कैसे सुरक्षित रहेगा? आधारशिला को ही नष्ट करने की योजना विकास के नाम पर क्रियान्वित हो रही है। इसका मतलब राष्ट्र का न अस्तित्व बचेगा, न आदर्श बचेगा तो सुरक्षा नाम की क्या चीज़ होगी? इसलिये राष्ट्र के अस्तित्व और आदर्श की परख होनी चाहिये।**

अब कोई कह सकता है कि जिन तत्वों का नाम लिया गया.. द्रुतगति से जो विकृति आ रही है, इनका विलोप हो रहा है, उसका कारण क्या है? बता दूँ दो टूक शब्दों में? महायंत्रों का प्रचुर

अविष्कार और प्रयोग। मनु जी ने संकेत किया मनु स्मृति (11.63) में - **महायन्त्रप्रवर्तनम्। महायंत्रों का जब प्रचुर आविष्कार और प्रयोग होता है तो पृथ्वी के धारक जितने तत्व हैं उनमें विकृति आती है, द्रुतगति से उनका विलोप होता है।** 15 वर्षों तक सेमिनार का आयोजन कीजिये..गौवंश इत्यादि सात तत्वों का मैंने नाम लिया... इनमें द्रुत गति से विकृति क्यों? इनका द्रुतगति से विलोप क्यों?... निष्कर्ष अंत में यही निकलेगा की **महायंत्रों का जब प्रचुर आविष्कार और प्रयोग होता है तो कोई भी दिव्य वस्तु या व्यक्ति सुरक्षित रहे, विकृत हुए बिना रहे, उसका विलोप न हो ये सर्वथा असम्भव है। तो मैंने एक संकेत मात्र किया कि आप राष्ट्र को सुरक्षित कैसे करेंगे? पृथ्वी विकृत, जल विकृत, तेज विकृत, वायु विकृत, आकाश विकृत, धर्म से परहेज़, गौवंश इत्यादि जो समृद्धि के द्योतक हैं, लोक परलोक को सार्थक करने वाले हैं द्रुतगति से हम उनको विकृत कर रहे हैं विकास के नाम पर, विलुप्त कर रहे हैं, तो ये तो विचित्र बात है।**

एक और संकेत करता हूँ - **स्वस्थ क्रान्ति के जितने स्रोत थे सब पर कूटनीति का आलम्बन लेकर पानी फेर दिया गया है। विश्व में भी स्वस्थ क्रान्ति नहीं हो सकती, भारत में भी स्वस्थ क्रान्ति नहीं हो सकती है।** ज़ोरावर सिंह, फतेह सिंह का आपने नाम सुना ही होगा हमारे गुरु गोबिंद सिंह जी के लाडले प्यारे महानुभाव,

महाराणा प्रताप, शिवाजी, लक्ष्मीबाई आदि का नाम सुना ही है। इसका अर्थ क्या हुआ जी? **जिन हेतुओं से महाराणा प्रताप जी ने, शिवाजी ने, लक्ष्मीबाई ने, ज़ोरावर सिंह, फतेह सिंह ने प्राणों को हथेली पर लिया उन हेतुओं से अब कोई क्रान्ति आ सकती है क्या? धर्म की रक्षा के नाम पर कोई क्रान्ति आ सकती है क्या? धर्म के प्रति तो छल बल डंके की चोट से अनास्था उत्पन्न कर दी गई। गौवंश की रक्षा के लिये कोई क्रान्ति आ सकती है क्या ? हमने संकेत किया... केवल एक आर्थिक क्रान्ति रह गई है और अर्थ की जो दशा है, दुर्दशा, उसका भी मैंने वर्णन कर दिया। अर्थात पूरे विश्व से विशेषकर भारत से भी विचार करें तो क्रान्ति के जितने स्रोत थे...**

सती साध्वी देवियों के शील की रक्षा के लिये....ध्यान दीजिए **- आर्ष प्रणीत हमारे यहाँ दो इतिहास हैं - ब्रह्मर्षि वाल्मीकि के द्वारा प्रणीत रामायण और वेद व्यास जी के द्वारा प्रणीत महाभारत। दोनों में एक-एक विश्व युद्ध का वर्णन है।** आखिर क्यों ? **एक-एक सती साध्वी हमारी देवी, मातृशक्ति के प्रति कटाक्ष करने वालों को दण्ड देने के लिये हमारे पूर्वजों ने एक-एक विश्वयुद्ध को मोल लिया। अयोनिजा, वैकुण्ठ लक्ष्मी स्वरूपा भगवती सीता के शील पर अपने उद्धार की भावना से सही, रावण ने कटाक्ष किया, हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने रामभद्र से कहा गाजर-मूली की तरह कुल-वंश को नष्ट कर दो। हमारे शील पर, हमारी देवी के शील पर कोई कटाक्ष करना चाहता, हम विश्व युद्ध को मोल लेते हैं। लेकिन आजकल विकास**

राष्ट्ररक्षा सङ्गोष्ठी (अगस्त २०२०)

के नाम पर जब शील के अपहरण को संस्कृति का रूप दिया गया है तो वो भी क्रान्ति का मार्ग विलुप्त। अयोनिजा थी भगवती सीता, ये तो आपको मालूम है।

स्वर्ग लक्ष्मी की अवतार कौन थी? द्रौपदी। यज्ञ कुंड से नहीं यज्ञ वेदी से, उसका भाई धृष्टद्युम्न यज्ञ कुंड से उत्पन्न हुआ था, और यज्ञ वेदी से उत्पन्न हुई थी अयोनिजा, विश्वसुंदरी, शीलवती, पतिव्रता द्रौपदी। उसके शील पर कटाक्ष करने का देवरों ने प्रयास किया, ऋषि-मुनियों ने कहा मार डालो दुर्योधन इत्यादि को। दो-दो विश्वयुद्ध हमने मोल लिया है एक-एक देवी के शील पर कटाक्ष करने वालों को दण्ड देने की भावना से। अभी गीता आदि की चर्चा हो रही थी, भगवत्कृपा से 700 श्लोक मुझे सन् 66 से याद हैं। और जितने भाष्य हैं संस्कृत के सब भी तैयार हैं। मैं केवल संकेत करना चाहता हूँ, सावधान ! अर्जुन को भगवान् ने क्या कहा? कर्त्तव्य का निर्णय एकाङ्गी नहीं होता। फिर से सुनिये, कर्त्तव्य का निर्णय एकाङ्गी नहीं होता। अर्जुन दुर्योधन ने जिस कगार पर तुमको लाकर रख दिया है अब दुर्योधन की बुद्धि की बलिहारी है कि वह युद्ध करने से विरत हो। कदाचित् वो युद्ध करने से विरत नहीं होता तो क्षात्र धर्म तुमको ललकारता है कि क्षत्रियोचित शील का परिचय देकर जूझ जाओ। कर्त्तव्य का निर्णय एकाङ्गी नहीं होता, यह गीता का सारांश मैं व्यवहारिक धरातल पर बोल रहा हूँ। आध्यात्मिक धरातल पर तो बोलता ही रहता हूँ। फिर से सुनिये - **भगवान् श्रीकृष्ण का वचन**

है, गीता की शिक्षा क्या है - कर्त्तव्य का निर्णय एकाङ्गी नहीं होता। महाभारत की बात कहता हूँ - अर्यमा, त्वष्टा, पूषा, ब्रह्मा इन चार देवताओं का नाम लिया गया। निशस्त्रीकरण के पक्षधर न होने पर भी स्वयं कोई अस्त्र-शस्त्र का निर्माण नहीं करते। ब्रह्माजी चक्र का निर्माण करके विष्णु जी को से देते हैं, स्वयं प्रयोग नहीं करते। फिर से सुनिये, महाभारत में चार का नाम लिया गया है - त्वष्टा, अर्यमा, पूषा और ब्रह्माजी। स्वयं अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग नहीं करते, स्वयं अस्त्र-शस्त्र धारण नहीं करते तो महाभारत में लिखा गया है - कहीं कहीं... जैसे भारत में पुष्कर आदि में... कहीं-कहीं इन चारों की पूजा होती है। हमारे यहाँ तो जो देवी देवता अस्त्र-शस्त्र को धारण करते हैं और उचित अवसर पर उसका प्रयोग करते हैं, उनकी ज्यादा पूजा होती है, अधिक से अधिक पूजा होती है।

एक और मैं संकेत करता हूँ - एक सज्जन बोल रहे थे, बढ़िया बोल रहे थे... चक्र की आवश्यकता है शंख की नहीं... उसके पीछे भी एक दार्शनिकता है। भगवान् विष्णु के चार हाथ... आयुध क्या हैं जी - शंख, चक्र, गदा, पद्म। इसके पीछे जो महाभारत आदि में दार्शनिकता है, कृष्णोपनिषद् में दार्शनिकता है, उस पर भी ध्यान देना चाहिये। भूत कितने होते हैं - पाँच। आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी। जो शंख भगवान् धारण करते हैं यह क्या है जी? नाभिक अस्त्र। आकाश के द्वारा विनिर्मित अस्त्र कौन है - शंख। शब्द ब्रह्म

का अभिव्यञ्जक होता है शंख। शंख का दोहरा उपयोग होता है - **स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्** (गीता 1.19)

भगवान् श्रीकृष्ण ने जब शंख बजाया तो पाण्डवों को आह्लाद उत्पन्न कर दिया। **एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा।**

धृतराष्ट्र के पुत्रों के, पौत्रों के हृदय को विदीर्ण कर दिया। तो शंख बजाना, देवी संपत्ति के जो व्यक्ति हैं, उनको आह्लादित करने में - एक कलावच्छेदेन एक ही चेष्टा के द्वारा दो फल की प्राप्ति हुई। **स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।** धृतराष्ट्र के पुत्रों-पौत्रों के हृदय को विदीर्ण करने वाला आकाश ही शंख के रूप में प्रकट है और बांसुरी के रूप में भी प्रकट है। उनको आप किसी अस्त्र शस्त्र से कम मत समझिये। सबसे अधिक शक्तिशाली कौन है? शब्दब्रह्म। शब्दब्रह्म को प्रकट करने के लिये शंख है। गदा क्या है जी? कृष्णोपनिषद् के अनुसार बोल रहा हूँ, श्रीमद्भागवत के बारहवें स्कंध के अनुसार बोल रहा हूँ - वायु तत्व, वायव्यास्त्र से तो आप परिचित होंगे, वायु तत्व को ही सार के रूप में भगवान् ने कौमोदकी गदा के रूप में धारण किया है। जो चक्र है, वो साक्षात् तेज ही चक्र के रूप में प्रतिष्ठित है। अब रह गये जल और पृथ्वी - कमल को पङ्कज भी कहते हैं, जलज भी कहते हैं,... पृथ्वी... वरुणास्त्र और पार्थिवास्त्र। पार्थिव अस्त्र भी होता है, वरुणास्त्र भी होता है... पृथ्वी और जल को मिलाकर के ही कमल की उत्पत्ति होती है। तो भगवान् जो श्री कृष्ण हैं या भगवान् श्रीमन्नारायण हैं, ये जो चार

हाथों में चार अस्त्रों को धारण करते हैं, ये सामान्य नहीं हैं। वंशी के द्वारा भी काम कर देते हैं, मोहिनी लीला भी कर देते हैं और मारक भी वंशी की ध्वनि है। शंख भी मारक भी है और तारक भी है। इसलिये हमने कहा इन सबको समझने की आवश्यकता है। तो हमारी संस्कृति यह सिखाती है कि कर्त्तव्य का निर्णय एकाङ्गी नहीं होता।

थोड़ा विचार कीजिये... चंद्रशेखर जी ने, श्री वाजपेई जी जब प्रधानमंत्री थे, एक गुप्त पत्र लिखा था। समाचार पत्रों के माध्यम से लगभग वह पत्र प्रकट हो गया, आधुनिक भाषा में कहें तो leak हो गया। चंद्रशेखर जी ने लिखा था भारत के इतने विभाग कगार पर आ चुके हैं, कभी भी भारत में इतने विभाग की सम्भावना है, सावधान रहिये। क्या-क्या विभाग जी? खालिस्तान। अमेरिका में रैली निकाली गई, यह तो ध्यान होगा ना? मुगलिस्तान - भारत में फिर मुगलिस्तान। और दलितस्थान या दलितस्तान। और बौद्धिस्तान, ये भी प्रकल्प चल रहा है। आप अयोध्या की चर्चा कीजिये तो बौद्ध कहेंगे हमारा क्षेत्र है। जगन्नाथ जी की चर्चा कीजिये पुरी में तो कहेंगे हमारा क्षेत्र है। इसका मतलब अंदर से... मैं मनोबल कम नहीं कर रहा हूँ लेकिन आँख मीच करके अपने को मस्त रखना भी उचित नहीं है। **जहाँ जहाँ से खतरा है, जो जो परिस्थिति उत्पन्न की गई है सत्ता, लोलुपता अदूरदर्शिता के वशीभूत राजनेताओं के**

द्वारा, राजनैतिक दलों के द्वारा उधर मैं ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ। एक और विभाग है - दक्षिण के जो पाँच / सात प्रांत हैं, इनको मिलाकर के भी अलग राष्ट्र बनाने का गुप्त अभियान वर्षों से चल रहा है, वो मुझे मालूम है। इसका अर्थ क्या हुआ? कटा पिटा जो भारत है शेष खालिस्तान, दलितस्तान, मुगलिस्तान, बौद्धिस्तान, और दक्षिण को मिलाकर एक बन जायेगा और। हिंदुस्तान रहेगा भी नहीं, क्या पता ! इसका मतलब क्या है? अंदर से सारी योजना ऐसी भयङ्कर है कि भारत किसी भी क्षण किसी भी टुकड़े में बँट सकता है, कितने ही टुकड़ों में बँट सकता है, इधर किसी राजनैतिक दल का बिल्कुल ध्यान नहीं है, इसपर भी मैं संकेत करता हूँ। दूसरी बात है - विधर्मियों ने जब हम पर शासन किया था, क्या क्या अत्याचार किया, आप लोग वर्णन करते हैं... मेरी आँखों के सामने है - 7 नवंबर 1966, गोपाष्टमी की तिथि, अटल बिहारी वाजपेई जी मंच से बोल चुके थे, महावीर त्यागी बोल रहे थे, तब जो घटना हुई मेरी आंखों के सामने, मैं सत्याग्रह में भाग ले रहा था... लाल किला से लेकर जंतर मंतर तक... दस लाख गौभक्त थे। ध्यान देकर सुनिए - मैंने अपनी आँखों से मध्य प्रदेश गुजरात आदि की उन देवियों को देखा है.... 7 नवंबर 1966 को जिनकी गोद में, बगल में दस महीने के बच्चे थे.... उन्होंने कल्पना की होगी कि गोली चलेगी? 10 महीने के बच्चों को बगल में लिये सत्याग्रह में आने वाली देवियों ने कोई उपद्रव किया होगा? लेकिन उस समय की प्रधानमंत्री जो थीं

मान्या... आप लोग समझ गये होंगे... भारत के गृहमंत्री गुलज़ारी लाल नंदा को कुछ भी पता नहीं, कांग्रेस के अध्यक्ष कामराज को आगे करके.... अब मैं विचित्र शब्द जो बोलूँगा... समझने वाले समझ जायेंगे... एक फालतू शब्द बोलूँगा एक पालतू शब्द.... शुक्र और कृष्ण व्यक्ति को आगे करके दक्षिण भारत से और हरियाणा से अर्धसैनिक बलों को बुला लिया गया था। मेरी आँखों के सामने 1400 गौभक्तों को, प्रवचन सुन रहे गौभक्तों को भुनवा दिया गया था, ये स्वतंत्र भारत है क्या? पृथ्वी के धारक गौ भक्त, पृथ्वी के धारक गौवंश छल बल डंके की चोट से एक प्रधानमंत्री ने दस मिनट में 1400 गौभक्तों को भुनवा दिया, नष्ट कर दिया, मेरी आंखों के सामने की बात है। मैं तो बेहोश हो गया, मुझे गोली नहीं लगी, तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि कैसे समझें कि भारत एक स्वतंत्र देश है? जो अत्याचार विधर्मियों ने किया, स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्रियों ने वही दुराचार, अत्याचार किया है।

गोधरा काण्ड - आप तू सुन रहे होंगे.. मैंने प्राणों को हथेली पर लेके जाकर उस डब्बे को देखा है, जहाँ 70 से अधिक राम भक्तों को जला दिया गया था, उस डब्बे को जा करके मैंने देखा है।

अयोध्या काण्ड - कोई जीवित होगा भूतपूर्व मुख्यमंत्री.... पीतल की गोली से राम भक्तों को भुनवा दिया गया। और जो शव बहा दिये गये, हमारे शिष्यों ने उनको फिर निकाला कहाँ से वह भी मुझे मालूम है। **भारत में ऐसे-ऐसे लोग मुख्यमंत्री**

हुए हैं जो निहत्थे राम भक्तों को गोली से भुनवा करके राज्य कर चुके हैं और गौरव पूर्वक कहते रहे हैं कि मैंने मुस्लिम तंत्र को सन्तुष्ट करने के लिये राम भक्तों को गोली से भुनवाकर कितने वर्षों तक राज्य किया है। यह देश क्या स्वतंत्र कहने योग्य है?

मैं एक संकेत करता हूँ ...कारगिल युद्ध के साथ... **पहले मैं गया जम्मू फिर गया राजौरी, एक-एक गोष्ठी मैंने गुप्त ली। बिहार की राजधानी पटना में आकर के, ओड़िसा की राजधानी भुवनेश्वर में आकर के एक-एक पत्रकार वार्ता के माध्यम से मैंने कहा- वाजपेई जी प्रधानमंत्री जी सावधान! पाकिस्तान आक्रमण करने वाला है। मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया गया, 7 महीने बाद कारगिल युद्ध हुआ। उस समय गुप्तचर क्या कर रहा था? अगर गुप्तचर था भी तो प्रधानमंत्री क्या कर रहे थे? केवल दो गोष्ठी के माध्यम से मुझे मालूम पड़ गया कि कहाँ से आक्रमण होगा, कितना आक्रमण होगा। प्रधानमंत्री को मालूम ही नहीं पड़ा? इसका मतलब क्या है? हम कैसे कह सकते हैं कि भारत स्वतंत्र है? स्वतंत्र भारत में हमारी पुलिस का, मिलिट्री शक्ति का उपयोग गौ भक्तों को, राम भक्तों को भुनवाने के लिये किया जाता है। इसी का नाम स्वतन्त्रता है क्या? इस देश को हम स्वतंत्र भारत कह सकते हैं क्या?** हमने एक संकेत किया।

और एक बात सुन लीजिए - ये जो सेना की स्थिति है अभी.... दलाई लामा जी का तो नाम मालूम होगा? मान्य दलाई लामा जी बहुत मानते हैं हमें और उनके प्रति हमारा स्नेह है, सम्मान है। भारत सरकार ने जो उनको सुविधा दी है उससे भी मुझे प्रसन्नता है। लेकिन जब दलाई लामा जी परिस्थिति विशेष में भारत में आये, अपने दल-बल के सहित उनका सम्मान होना था, स्वागत होना था इसका मैं समर्थक हूँ। लेकिन चीन ने उस समय लाभ उठाने के लिये जो अपने आतंकवादियों को भेज दिया, उन आतंकवादियों की तीन-तीन, चार-चार पीढ़ी भारत में हो गई है, उनकी पहचान भारत सरकार को नहीं है क्या? मैं एक मंत्री का नाम नहीं लेता हूँ ... वह मंत्री जीवित होंगे मेरे ख्याल में स्वर्गीय नहीं हुए होंगे..., थोड़ा आप सुन लीजिए... "आतंकवाद की धारा में बहने वालों, तुम सामान्य धारा में बहो".... उनसे कृत्रिम ढंग से एक मंत्री ने समर्पण करवा लिया, फिर आगे आपको मालूम होगा.. समर्पण करवाने के बाद क्या किया? उनको सेना में नियुक्त कर दिया। और पड़ोसी राष्ट्र से आतंकवादियों के द्वारा हमारे व्यक्तियों को भुनवाया गया, भारत में प्रवेश करने का उस मंत्री ने मार्ग प्रशस्त किया। इसका मतलब क्या है? राष्ट्रद्रोह के जितने प्रकल्प हो सकते हैं, स्वतंत्र भारत में क्रियान्वित हैं। मंत्री का नाम नहीं लूँगा, वो जीवित होंगे। फिर से सुनिये - **आतंकवादियों को कृत्रिम ढंग से सामान्य धारा में बहने का अनुरोध करके, आतंकवादी घोषित नहीं कर के, वो सामान्य धारा**

में आ गये फिर उनको मिलिट्री में ऊँचे से ऊँचा पद दिया गया। और चीन से सांठगांठ करके आतंकवादियों को घुसवाया गया...जवाहर लाल नेहरू जी के साथ में जो चीन ने, दलाई लामा जी के साथ साथ आतंकवादी व्यक्तियों को भेज दिया उससे पूरा भारत भरा हुआ है। चप्पे-चप्पे पर, परिस्थिति ऐसी है कहीं भी हम अपने अस्तित्व और आदर्श की रक्षा नहीं कर सकते। तो हमने संकेत किया सज्जनों..

मनोबल शिथिल करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन हम एक संकेत करना चाहते हैं.... आप जैसे प्रबुद्ध व्यक्ति... कुछ भी हमारा सुरक्षित नहीं है, भाषा हमारी सुरक्षित नहीं है, संस्कृति हमारी सुरक्षित नहीं है, अस्तित्व हमारा सुरक्षित नहीं है, आदर्श हमारा सुरक्षित नहीं है, ऐसी स्थिति में भव्य भारत की रचना हम करें तो किस प्रकार करें? उसके लिये मैं एक संकेत करता हूँ - सबसे बड़ी विभीषिका क्या है? कोई भारत में ऐसा सामाजिक संघटन है, धार्मिक संघटन है, आध्यात्मिक संघटन है जो वेद आदि शास्त्रसम्मत, मनुवादी शास्त्रसम्मत परम्परा से व्यासपीठ के पुरोधा मान्य शङ्कराचार्यों को सुरक्षित देखना चाहते हों? ध्यान नहीं गया होगा आपका। **कोई ऐसा सामाजिक संघटन भारत में नहीं है, कोई धार्मिक संघटन नहीं है, कोई आध्यात्मिक संघटन नहीं है, कोई राजनैतिक दल नहीं है ऐसा जो परम्परा प्राप्त गुरु परम्परा का उच्छेद न करना चाहता हो। सबके मन में एक विषाक्त भावना है - अगर**

मनुवादी कोई सुरक्षित रहा तो हम राज्य नहीं कर सकते। इसलिये गुरु तो रहें लेकिन राजनैतिक दलों के प्रचारक बनकर, एजेंट बनकर, शङ्कराचार्य का पद भी उनको मिलना चाहिये जो आतंकवाद का समर्थन करें, स्वयं भी आतंकवादी के रूप में काम करें। और सेक्यूलर तंत्र के पक्षधर होकर के सनातन परम्परा के उच्छेद में वो पद का उपयोग करें। सबसे बड़ी बात यह है कि **हम भारत में क्यों उपेक्षित हैं? मुझे किसी की इच्छा नहीं है, मुझे धन की, मान की इच्छा नहीं है, मैं प्राणों को हथेली पर लेकर व्यवहार करता हूँ , लेकिन क्या मैं भारत का नागरिक नहीं हूँ? क्या मुझे भारत की चिंता नहीं है? सब ओर से प्रताड़ित मैं क्यों रहता हूँ ? कि एक भी मनुवादी अगर शङ्कराचार्य सुरक्षित रह गया... हम राज्य नहीं कर सकेंगे। जैसे भूत, प्रेत, पिशाच को... हनुमान जी का नाम ले लें तो डर लगता है। वैसे ही इन लोगों को मालूम है कि अगर व्यासपीठ की परम्परा में एक भी मनुवादी सुरक्षित रहा... मनु का जो दर्शन है... उसमें दर्शन, विज्ञान और व्यवहार में सामञ्जस्य स्थापने की ऐसी क्षमता है कि पूरा विश्व उस पर लट्टू हुए बिना नहीं रहेगा। तो छल बल डंके की चोट से व्यासपीठ को विकृत, नष्ट, विलुप्त करने का अभियान है। कोई भारत में ऐसी संस्था नहीं है, कोई ऐसा धार्मिक संस्थान नहीं है, सामाजिक संस्थान नहीं है, कोई आध्यात्मिक संस्थान नहीं है जो मनुवाद की परम्परा को नष्ट करने का कुचक्र ना चलाता हो। व्यास गद्दी को विलुप्त करो, परम्परा प्राप्त शासन तंत्र को विलुप्त करो,**

सेक्युलर तंत्र के नाम पर हमारे अस्तित्व और आदर्श की जो पहचान है गौवंश आदि, उन सब को विकृत कर दो विलुप्त कर दो.... इस विभीषिका की स्थिति में मनोबल को दुर्बल करने की भावना से नहीं... और एक बात ले लीजिए चुटकुला लीजिए- अंग्रेज़ों के शासन काल में सेना में जो उच्च अधिकारी होते थे, वो क्या करते थे... जो मरने-मारने के लिये तैयार रहते थे, गोली चलाते थे, प्राणों को हथेली पर रखते थे, उनको गंदे नाले के कीड़े के समान समझते थे, उनको कोई महत्व नहीं देते थे। आज जो ऊँचे पद पर सेना में हैं (आप लोगों को छोड़कर आप तो बहुत व्यवस्थित हैं), वो क्या.. जो मरने-मारने के लिये तैयार रहते हैं, गोली चलाते हैं, छाती पर गोली झेलते हैं, उनके प्रति जो स्नेह होना चाहिये, सम्मान होना चाहिये उनकी सुविधा का कोई ध्यान है क्या? आज भी वह भेद की बुद्धि ज्यों की त्यों बनी हुई है। पठानकोट की घटना आपको याद होगी... हमारे सैनिक गाजर-मूली की तरह काटे जा रहे थे, लेकिन एक सैनिक जिसकी आज्ञा पर हमारे सैनिक, सेनाधिकारी, जिसकी आज्ञा पर हमारे सैनिक युद्ध करते, वो आज्ञा नहीं दे रहा था। अंत में क्या हुआ? पठानकोट (पञ्जाब) की बात है... एक सैनिक ने उसका हाथ काट दिया। तुम हमारे राष्ट्र को नष्ट करोगे? हम मरने-मारने के लिये तैयार हैं, हमको आज्ञा नहीं मिल रही है, इसका मतलब क्या है? चप्पे-चप्पे पर हर जगह भारत को विखंडित करने, परतंत्र करने के षड्यंत्र हैं। हम लोग चैन की बंसी बजा रहे हैं... इसलिये वर्तमान

शासनतंत्र, भूतपूर्व शासनतंत्र, कोई भी शासनतंत्र ऐसा नहीं है जिसको इस प्रकार की सूझबूझ प्राप्त हो, सत्ता, लोलुपता, अदूरदर्शिता के चपेट से मुक्त हो।

अब मैं दो वाक्य कहता हूँ - सोमनाथ मंदिर.... मुझे बहुत प्रसन्ता है... मैं गया था सोमनाथ जी। कम से कम कलंक तो मिटा ना... सोमनाथ जी अपनी जगह प्रतिष्ठित हो गये... सरदार वल्लभभाई पटेल ने मार्ग प्रशस्त किया, मंदिर बन गया। लेकिन आगे.. अस्तित्व की तो रक्षा हो गई मंदिर की, वहाँ देखिए ट्रस्टी कितने हैं जी? भूतपूर्व मुख्यमंत्री, वर्तमान मुख्यमंत्री... राजनेताओं ने उस पवित्र संस्थान को अपने चंगुल में रख रखा है। उसके आय का स्रोत राजनेताओं की जेब में। इसका मतलब अस्तित्व की रक्षा तो हो गई, आदर्शविहीन अस्तित्व की रक्षा। राम मंदिर को लेकर देखिए... राम मंदिर को लेकर बहुत अच्छी बात है 496 वर्षों का जो कलङ्क है उसको मेटने के लिये शिलान्यास हो गया... मंदिर बने, मैं बिल्कुल पक्षधर हूँ, लेकिन परिस्थिति क्या है - मंदिर के अस्तित्व की तो रक्षा हो जायेगी लेकिन आदर्श बिल्कुल सेक्युलरवाद का होगा माने आदर्श को लुप्त कर दिया जायेगा। इसका मतलब उसका सञ्चालन बिल्कुल भौतिक विधा से होगा। तो **किसी ने हमारे अस्तित्व पर वार किया, किसी ने आदर्श पर वार किया।** घुमा फिरा कर हमारे अस्तित्व और आदर्श पर सब ओर से प्रहार ही प्रहार है।

इसलिये हमने संकेत किया कि कम-से-कम आप जैसे प्रबुद्ध व्यक्तियों को.. मनोबल दुर्बल करने में मेरा तात्पर्य नहीं है... बहुत सोच समझकर भव्य भारत की संरचना और विश्व के हित में जो भव्य भारत का स्वरूप हो सकता है उसका निर्धारण करना आवश्यक है, प्रशिक्षण लेना आवश्यक है। **परस्पर सद्भावपूर्वक संवाद के माध्यम से भव्य भारत की संरचना करके फिर आगे बढ़ने की आवश्यकता है।**

नारायण
हर हर महादेव

★★★★★